
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली-110002

गुलाब और बुलबुल

त्रिलोचन

वाणी प्रकाशन
4697/5, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

प्रथम (वाणी) संस्करण 1985
 : मूल्य 50.00 रुपए
आवरण : गोविंद प्रसाद

अशोक कम्पोज़िंग एजेंसी द्वारा
कमल प्रिंटर्स, दिल्ली 110031
में मुद्रित

Gulab Aur Bulbul
by Trilochan

सुदामा शुक्ल को

सूचना

वाणी प्रकाशन से 'गुलाब और बुलबुल' नए रूप में प्रकाशित हो रहा है, इस में पूर्व रूप की सभी रचनाएँ आ गई हैं, और 40 ग़ज़लें और, जो उसी क्लास की हैं, समाविष्ट हैं।

—त्रिलोचन

क्रम

गुलाब और बुलबुल

दुख में भी परिचित मुखों को तुम ने पहचाना है क्या
अपना ही सा उन का मन है यह कभी माना है क्या

जिन की हम ने याद की जिन के लिए बैठे रहे,
वे हमें भूलें तो भूलें इस में पछताना है क्या

हाथ ही हिलता न हो जब पाँव ही उठता न हो,
इन की उन की बात से आना है क्या जाना है क्या

आजकल क्या कुछ इधर मेरे हृदय को हो गया,
चुप ही चुप है, अब उसे रोना है क्या गाना है क्या

जब तुम्हीं से दूर हूँ तब मैं निकट किस के रहूँ,
होश जाने पर यहाँ खोना है क्या पाना है क्या

हँस के तुम ने क्यों कहा बोलो तुम्हें क्या चाहिए,
तुम हो तो पाना है क्या और तुम को भी लाना है क्या

मुझ को दुख यदि है त्रिलोचन तो इसी का जान तू
यदि स्वयं समझें न वे तो उन को समझाना है क्या

कष्ट होगा तुम्हें रह रह के यों आया न करो
और, आया जो करो रूठ के जाया न करो

शर्म खाएगी य' कोयल कभी न गाएगी,
बाग़ में चैत्र महीने में, यूँ गाया न करो,

घाम का घर डरे भी तो कहाँ तक कोई
तुम उजाड़ा न करो आप जो छाया न करो

ग़म की अकसीर दवा हाट में नहीं मिलती,
ग़म ग़लत करने को दूकान पै जाया न करो

लोग कच्चा तुम्हें बतलायेंगे ख़ुश हो कर
ग़ैर के आगे गिला अपनों का गाया न करो

क्या हुआ, लोग जो हँसते हैं उन्हें हँसने दो,
प्रेम की पीर में आँसू तो बहाया न करो

लोग समझेंगे तुम्हें प्यार नहीं आता है,
जिस को नज़रों से उठाया है गिराया न करो

हम तो सर आँखों पे लेने को तुम्हें बैठे हैं,
क्या करें हम जो तुम्हीं सामने आया न करो

डीठ लग जायगी, छुप के ही रहो अच्छा है,
रूप यह ग़ैब का दुनिया को दिखाया न करो

हम चलें भी तो कहाँ तक चलें, बताओ भी,
जिस पै टोके कोई वह चाल सिखाया न करो

कहते हैं वोह कि त्रिलोचन; मुझे पसंद नहीं,
आपसी चर्चा में नाम उस का तो लाया न करो

और जो कुछ भी हो पर इस से तो इनकार नही
तू न चाहे तो मुझे जीना भी स्वीकार नही

प्यार जिस ने न कभी देखा सुना या जाना,
कैसे समझेगा यही प्यार है य' प्यार नहीं

मैं तेरी राह में खुद चल के इस लिए बैठा,
घर में तू कैद है तुझ पर मेरा अधिकार नहीं

मैं ने और कुछ न किया तुझ को हृदय दे डाला,
जीत वह मेरी है और जीत कभी हार नही

देख आया हूँ कहीं भी नहीं मिला कोई,
गुल ही गुल जिस को मिले और मिले ख़ार नही

धूल का खेल है, दुनिया में धूल उड़ती है,
कौन इस धूल से अब तक हुआ लाचार नही

मूरतें मिट्टी की देखीं तो जी नहीं माना,
साज देखा तो रुचा कोई भी शृंगार नही

आए वे उठ के किया उन का सभी ने स्वागत,
कौन स्वागत में खड़ा रहने को तैयार नही

उन को देखे से दुःख दूर चला जाता है,
पहले दिखता था कि अब इस से तो निस्तार नही

हम तो हर राह के रजकण है, दबे बैठे है,
कैसे उट्ठेंगे अगर चरणों का आधार नहीं

हम जो करबद्ध खड़े हैं, अटल प्रतीक्षा है
पूजा करने से हुआ कोई गुनहगार नही,

राह पर गिरा यदि तू तो तुझे दुख होगा ही,
दु.ख कैसा भी हो जीवन में वह अपार नहीं

अच्छा तो यह है त्रिलोचन कि तू बुरा मत मान,
जो तिरस्कार ही मिलता है पुरस्कार नहीं

यह चिंता है वह चिंता है
जी को चैन कहाँ मिलता है

फूल आनंद का बहुत खोजा,
कब आता है, कब खिलता है

कहा किसी ने नहीं, 'सुखी हूँ'
देखा सब को व्याकुलता है

जीवन पथ पर जिन को देखा
उन सब से मन की ममता है

कैसे कहा था तू ने त्रिलोचन
इष्ट आप ही आ मिलता है

उन से भूला न गया मुझ से भुलाया न गया
प्यार को आना था आया व' बुलाया न गया

य' कहूँगा, व' कहूँगा, व' जरा आएँ तो,
हर्फ़ आधा भी मगर होंट पै लाया न गया

हम कहे भी तो कहें क्या नसीब है अपना,
देखते हम भी क़हर उन से ही ढाया न गया

जिन की याद आई तो गीत आप उमड़ चलते थे,
उन के स्वागत में य' क्या गुजरा कि गाया न गया

दर्द जो आया तो दिल में उसे जगह दे दी,
आ के जो बैठ गया मुझ से उठाया न गया

यों तो रंग एक है जिस से रची है दुनिया यह,
रंग उन का सा मगर ढूँढ के पाया न गया

एक है वह भी कि जंगल को बसा देते है,
एक है आप कि पंछी भी बसाया न गया

जिंदगी कितनों की कटती है आस्मां के तले,
एक छप्पर भी किसी से यहाँ छाया न गया

हम ने देखा है प्रतीक्षा की बेकली क्या है,
तुम से क्यों अपने दिए वक़्त पै आया न गया

अपने संकोच को कहूँ भी तो कहूँ मैं क्या,
तुम ने पूछा भी हाल मुझ से बताया न गया

घट जो ख़ाली है भेद आप कहा करता है,
लाख कोशिश की मगर मुझ से छिपाया न गया

ख़ूब होता जो मेरा दर्द देख पाते वे,
क्या करूँ मुझ से तमाशा य' दिखाया न गया

दिल पुकारा ही किया होंट खुल नहीं पाए,
उन से बोला न गया मुझ से बुलाया न गया

उस से कहते हैं जी की, जो सुने अकेले में,
हाल जी का कहीं महफ़िल में सुनाया न गया

बात क्या है जो त्रिलोचन कटा कटा सा है,
महफ़िलों में इधर उस को कहीं पाया न गया

कोई दिन था जब कि हम को भी बहुत कुछ याद था
आज वीराना हुआ है, पहले दिल आबाद था

अपनी चर्चा से शुरू करते हैं अब तो बात सब,
और पहले यह विषय आया तो सब के बाद था

गुल गया, गुलशन गया, बुलबुल गया, फिर क्या रहा,
पूछते हैं अब व' ठहरा किस जगह सैयाद था

मारे मारे फिरते है उस्ताद अब तो देख लो,
मर्म जो समझे कहे पहले वही उस्ताद था

मन मिला तो मिल गए और मन हटा तो हट गए
मन की इन मौजों प' कोई भी नहीं मतवाद था

रंग कुछ ऐसा रहा और मौज कुछ ऐसी रही,
आपबीती भी मेरी वह समझे कोई वाद था

अन्न जल की बात है, हम ने त्रिलोचन को सुना,
आजकल काशी में है, कुछ दिन इलाहाबाद था

देखा जो मै ने राह का बानी वहाँ न था
आवाज़ ही आवाज थी मानी वहाँ न था

कश्ती हमारी और तुम्हारी जहाँ डूबी,
सच पूछो तो ऐसा कोई पानी वहाँ न था

जा पहुँचा था भूला हुआ, भटका हुआ जहाँ,
मेरे सिवाय कोई भी फ़ानी वहाँ न था

उट्ठा तो चला, चल पड़ा,चलता चला गया,
चलने की धुन थी कष्ट का ध्यानी वहाँ न था

किस ओर से जाना है, कहाँ कैसा है, क्या है,
इच्छा तो पूछने की थी ज्ञानी वहाँ न था

मिलने को था अमृत किसी के प्राण के बदले,
सब थे प्रपित्सु प्राण का दानी वहाँ न था

देखा कि लोग झुक रहे हैं पेट के आगे,
टूटे मगर न झुके व' मानी वहाँ न था

जिस ने तुम्हें बुलाया, बिठाया, अदब दिया,
देखा तो उस का एक भी सानी वहाँ न था

दुख से अधीर लोग मिले मुझ को त्रिलोचन
औरों का दुख भी समझे व' प्राणी वहाँ न था

यदि नहीं अभिलाप तो जीवन नहीं
यदि नहीं उत्साह तो यौवन नहीं

जिस को देखें देख कर खो जायँ हम,
रूप में वह शेप भोलापन नहीं

प्रेम का वह वेग अब क्या हो गया
देह में वह रेशमी कंपन नहीं

आजकल अभिनंदनों की धूम है,
किंतु सच्चा एक अभिनंदन नहीं

पाप पश्चात्ताप से ही जायगा,
हर सके वह ताप वह चंदन नहीं

चल रही है लू मही में त्रास है,
जेठ से कुछ दूर तो सावन नहीं

किस को मैं संदेश दे कर भेज दूँ,
जाय फिर आ जाय वह धावन नहीं

विश्व का कल्याण देखे और 'लाय,
देखता हूँ मैं अभी वह जन नहीं

आदमी में आत्मीयत क्या रही,
पास में उस के अगर कंचन नहीं

बोल ही में आदमी का मोल है,
बोल है तो आदमी निर्धन नहीं

हम ने देखा है त्रिलोचन को स्वयं,
जीवन उस का अन्य का जीवन नहीं

कलेजे का दुख कौन कह पायगा
शराघात क्या कोई सह पायगा

हुआ सो हुआ अब भुला दो उसे,
यहाँ नित्य कोई न रह पायगा

चलेगा वही शान से अपनी राह,
जो प्रेम अपने अंतर से गह पायगा

महत्प्रेम का जो महासौध है,
रहेगा, रहेगा, न ढह पायगा

अनल कितना दाहक है, मालूम है,
मगर सत्य को वह न दह पायगा

नहीं गाँठ जिस के हृदय की खुली,
व' क्या प्रेम धारा में बह पायगा

जो धड़कन ही इस दिल की गिनता रहा,
व' क्या राज फिर दिल के कह पायगा

बिस्तरा है न चारपाई है
ज़िंदगी ख़ूब हम ने पाई है

कल अंधेरे में जिस ने सर काटा,
नाम मत लो हमारा भाई है

गुल की ख़ातिर करे भी क्या कोई,
उस की तक़दीर में बुराई है

जो बुराई है अपने माथे है,
उन के हाथों महज़ भलाई है

अब तो जैसी भी आए सहना है,
दिल से आवाज़ ऐसी आई है

ठोकरें दर-ब-दर की थी, हम थे
कम नहीं हम ने मुँह की खाई है

तुम ने अब तक नहीं विचार किया,
आज फिर उन की बात आई है

दिल की बातें निकाल लीं बाहर
रागिनी कौन तुम ने गाई है

सब्र से काम लो ज़रा ठहरो,
बात ज़ालिम ने क्या सुनाई है

गुल अगर बाग में रहे तो क्या,
कौन उस को वहाँ बढ़ाई है

कब तलक तोर वे नहीं छूते,
अब इसी बात पर लड़ाई है

आदमी जी रहा है मरने को
सब के ऊपर यही सचाई है

कच्चे ही हो अभी त्रिलोचन तुम
धुन कहाँ वह सँभल के आई है

मेरा दिल व' दिल है कि हारा नहीं है
कहीं तिनके का भी सहारा नहीं है

जो मौजों को देखा तो जी ही न माना,
य' मालूम था यह किनारा नहीं है

जिसे देख के लोग पलकें बिछा दें,
कहेगा उसे कौन प्यारा नहीं है

करें हम वही, आप जो चाहते हैं,
मगर किस तरह, कोई चारा नहीं है

कहाँ प्रेम सब को दिखाई दिया है,
नदी फल्गु है जिस में धारा नहीं है

जो पतझर के पत्ते सा उड़ता रहा है,
कहे कौन क़िस्मत का मारा नहीं है

य' आकाश है जिस में तारे ही तारे,
मगर इसमें मेरा व' तारा नहीं है

सुलावण्य आँखों में आता रहा है,
हुआ अश्रुजल यों ही खारा नहीं है

किसी का धरा पर हुआ वह न होगा,
त्रिलोचन यहाँ जो तुम्हारा नहीं है

बंद जीवन युगों का छूटा है
बाँध को टूटना था टूटा है

खोया किस ने कहाँ कहाँ क्या क्या,
किस ने बढ़ कर सवेग लूटा है

मुग्ध हो मानते हो किस को तुम
वह तुम्हारा ही बेल बूटा है

बात कहने को कह गए हम भी,
पीछे छाती को अपनी कूटा है

तुम से है और उन से है जो और,
बात का यह तनाव झूटा है

इन दिनों तुम ने कुछ अवकाश तो पाया होगा
मुश्किलों ने न इधर तुम को सताया होगा

लोग मेहमान की सुनते हैं और सहते हैं,
तुम को इस का भी कुछ अंदाज तो आया होगा

बात औरों की जो रख ली तो बुराई क्या है,
किस ने अनुराग की लहरों में न गाया होगा

तुम जो बचने के लिए भाग रहे हो सब से,
ठौर है कौन जहाँ दुख न यह छाया होगा

जो तपे है, न कहीं जिन के जी को ठंडक है,
बोल कोयल का उन्हें कब नहीं भाया होगा

तुम तो करुणा से भरे ऐसे थे कि क्या कहिए,
रंग दुनिया ने ही कुछ तुम पै दिखाया होगा

प्रीति को छोड़ जहाँ और कुछ नहीं देखा,
कौन वैराग्य छुपा कर वहाँ लाया होगा

आज जो धूप के झुलसे हैं कभी उन पर भी
घूमता है जो उसी मेह का साया होगा

उन को मालूम क्या किस धातु का त्रिलोचन है
बात आने पै उन्हें तुम ने बताया होगा

बात मेरी नहीं मानी नहीं मानी तुम ने
जी में जो बात बसी थी वही ठानी तुम ने

मेरा क्या, बात कही और लगा अपनी राह,
अपने आगे किसी की बात न जानी तुम ने

बात बिगड़ी तो बिगड़ती ही गई बन न सकी,
गो बनाने में किया ख़ून का पानी तुम ने

विश्व की छत का सुदृढ़ स्तंभ जिन्हें समझा था,
देखा है अपनी ही आँखों उन्हें फ़ानी तुम ने

मान वह वस्तु नहीं है जो तुम्हारी ही हो,
और भी देखे हैं मन के कई मानी तुम ने

प्रेम जो जी में जगा तो विराग ले बैठे
ख़ाक दुनिया की इसी लाग में छानी तुम ने

साधना क्या है त्रिलोचन तुम्हें मालूम ही है,
देखते भी हो सुनी भी है कहानी तुम ने

किस का हम ने किया नुकसान कोई कह तो दे,
भूल के भी किया अपमान कोई कह तो दे

यों तो इनसान भूल चूक किया करता है,
भूल मेरी भी निगहवान कोई कह तो दे

सब की दिन रात की कह सकते हैं अंतर्यामी,
मैं ने छोड़ा है कभी ध्यान कोई कह तो दे

दुर्दशा औरों की सुनते हैं सभी क्या सुख से,
मैं ने भी इस प' दिया कान कोई कह तो दे

दिल कहाँ देते हैं वह बात किया करते हैं,
झूट है मेरा य' अनुमान कोई कह तो दे

हम अभावों की उन्हें बात भी सुनाएँ क्या,
जा के माँगा है कहीं दान कोई कह तो दे

काल पड़ जायं मेह आए और निकल जाए,
फिर भी सूखेंगे नहीं धान कोई कह तो दे

लू, लपट और बवंडर हो, जेठ तपता हो,
मीठी पंचम की नहीं तान कोई कह तो दे

आर्द्र हो के जो मेह घुमड़ आए आर्द्रा के,
उन का गर्जन नहीं है गान कोई कह तो दे

चाह से आज नहीं कल कभी तो आएंगे,
यों ही किस के हुए मेहमान कोई कह तो दे

बात कुछ होती है कुछ लोग उड़ा देते हैं,
कब त्रिलोचन से थी पहचान कोई कह तो दे

द्वार देख आओ तो लगता है कोई आया है
स्पष्ट हो जाय जरा सत्य है कि माया है

हम ने खोया है जहाँ जो छिपा नहीं है अब,
कोई बतलाय कहीं हम ने भी कुछ पाया है

दर्द ने एक हमी को दिनानुदिन घेरा,
हम ने गाया है तो बस उस के लिए गाया है

सिर झुकाए हुए उदास उदास बैठे हो,
कोई संदेश नया उन का दूत लाया है

तुम ने मुँह फेर लिया हम से जब तो क्या कहिए,
हम ने समझा कि तुम्हें अब से यही भाया है

कोई कैसे न बिन कहे भी यह समझ जाए,
मेरे सिर पर जो तुम्हारा सनेह छाया है

उन को हँसती हुई मनुष्यता कहाँ भाई,
शोक ही को उन्होंने ला यहाँ बसाया है

दुःख को, दंभ को, ईर्ष्या को, युद्धलिप्सा को,
नष्ट करने के लिए नव मनुष्य आया है

अब अधिक दिन नहीं अन्याय न यह उत्पीड़न,
वर्ष के अंत में अंत इन का भी तो आया है

फूल मैत्री के खिले हैं, सुगंध छाई है,
आज उल्लास मनुज ने नवीन पाया है

मेघ छंट जायेंगे आता है अरुण आए भी
यह त्रिलोचन प्रतीक्षित मुहूर्त आया है

बात दुखियों की कौन है जो यहां सुनता है
कहते है वह कि हंस मोती नहीं चुनता है

वह न अपने हुए न होंगे मानते है हम,
चित्त का क्या करें जो उन की बात गुनता है

व्यर्थ पछताता है इस से नहीं कुछ आने का,
खोता धीरज भी है और अपना शीश धुनता है

इस से कुछ भी न हुआ और न होने वाला है,
ताने बाने हजार फिर भी मन है बुनता है

हम ने उन से य' कहा अब नहीं है वह लोहा,
क्या हुआ, बोले वह, लोहा भी कहीं घुनता है

बात कुछ ऐसी हो गई है अब कि पूछो मत,
हाट में कौड़ी की हीरा भी आज भुनता है

कौन मंदिर के द्वार में भवन का पट देगा,
होम में क्या कोई अपना ही अंग हुनता है

बात अपनी नहीं कहोगे क्या
मन की लहरों में ही बहोगे क्या

कष्ट है और आपदाएँ है,
उन को चुपचाप ही सहोगे क्या

डूबता है जो बेसहारा है,
हाथ उस का नही गहोगे क्या

जो अकेला है संग का भूखा,
साथ उस के कभी रहोगे क्या

सुख जो औरो को दे सुखी वो है,
इस का आनद भी लहोगे क्या

व्यर्थ मीनार से बड़े बन के
तुम भी एकात में ढहोगे क्या

पूछते है जो वह त्रिलोचन को,
डाह की आग में दहोगे क्या

आप से पत्र जो इधर आया
रंग इस सूनी डाल पर आया

फूल ने मुँह कहीं निकाला तो,
देखते ही स्वयं भ्रमर आया

दुखी दुख ही सुनायगा अपना,
दर्द छूने से जो उभर आया

हम जो हँसते है मानिएगा सच,
आप के संग का असर आया

देखादेखी भी जिया करते हैं,
वरना जीना हमें क्यों कर आया

पा के मकरंद अचानक मैं तो,
रिक्त जी, देखता हूँ, भर आया

देश देखे, यहाँ वहाँ घूमा,
फिर प्रवासी पलट के घर आया

बाग़ को आज देखते हो क्या,
अब तो पतझर यहाँ उतर आया

टूटी फूटी ज़बान है अपनी,
देवताओं का कहाँ स्वर आया

डूबा आ कर कहाँ, किनारे, जब,
बीच मझधार से उबर आया

बस त्रिलोचन कृतज्ञ है, नत है,
ध्यान में आप के उतर आया

फूल ये लाया हूँ चाहे इन्हें स्वीकार न कर
पाँव में रहने दे, बस इस से तो इनकार न कर

यह तो पृथ्वी है पाँव के तले रहेगी ही
तू भले ही इसे क्षण भर भी कभी प्यार न कर

जो तने रहते हैं, अच्छा है तना रह उन से,
मान हो ही न जहाँ तू वहाँ मनुहार न कर

जिन को भगवान ने रक्खा है उन्हें रहने दे
फूलने फलने दे, उन का कभी संहार न कर

वे भी मानव है कि आड़े नहीं आते तेरे
तू भी मानव है जब उन का कभी अपकार न कर

हास्य, वीभत्स, करुण, रौद्र रस न आ जाएँ
अपने ही स्वार्थ का इतना कभी शृंगार न कर

छेड़ने से ही तार तार मिला करते हैं
नासमझ हो के कभी वीन में झनकार न कर

तुझ में धरती की सहनशक्ति की कमी यदि हो
अच्छा होगा यही तब तू कभी घर बार न कर

जान इनसान की अनमोल चीज है कोई
उस की बेक़द्री का कोई कभी व्यापार न कर

जिस में दुर्नाम हो अपयश ही हाथ लगता हो
ऐसे आचार से भूले भी तू व्यवहार न कर

लोग अँधियार से डरते हैं और बचते हैं
लाभ लेने के लिए तू कभी अँधियार न कर

भय से मानव का हृदय प्रीति नही करता है
प्रीति हो जायगी, भय का कभी संचार न कर

रोग रह जाय कहीं रोगी ही न छुट्टी ले
वैद्य मानवता के, वस कर, अधिक उपचार न कर

तेरे उपकार से दुनिया की जान पर आई
अपना उपकार कर अब दुनिया का उपकार न कर

अपना कर्तव्य अगर तू निभा नहीं पाता
तो यही ठीक है कोई कही अधिकार न कर

जगे चिंता में सदा सोने की
देखा यह वात नहीं होने की

एक दो कहते हो, वहुत हैं काम,
याद तो चीज नहीं ढोने की

यह नहीं, वह नहीं, अधिक मत पूछ,
जिंदगी बन गई है रोने की

दृष्टियाँ आयँगी, सजा तू घर,
फ़िक्र ले कर न बैठ कोने की

बेल मोती की नही होती है,
चीज है ही नहीं य' बोने की

लोनी लग लग के कट चली दीवार,
सूरत आई है घर के खोने की

कालिमा आज और ज्यादा है
अभी चिंता कर इसे धोने की

पिंड अपना सँभाल, दिन भी देख
फिक्र कर अपनी आप पोने की

क्या है, सोया हूँ या जगा हूँ मैं,
छाप शायद है अभी टोने की

भोग की वात क्यों चलाता है,
धुन अभी एक है सँजोने की

तू त्रिलोचन को छोड़ दे चिंता
युक्ति कर आप ही कुछ होने की

आ के गई बिपत नही
बदले मेरे नखत नहीं

ख़ूब था ख़त व' आप का,
बोले व' मेरा ख़त नही

आई हवा जो ले गई,
अब क्या, रहा व' सत नही

सौदा बिका जो बिक गया,
देखो कभी फिरत नही

जीवन की यह बहार है,
य' कोई मेरा मत नही

काम से अपने मिलते हैं,
कोई किसी में रत नहीं

अब भी मनुष्य मिलते हैं,
इस में मेरा अमत नहीं

दिल के दलाल कहते है,
धंधे में अब तो सत नहीं

नए विरोध आ गए,
पहले हुए विगत नही

अंगों में क्यों अब आप के
लोच नहीं व' गत नही

प्रेम की हाट में कही,
पक्की लिखत-पढ़त नही

अपनी तरफ़ से जीते हैं,
जीने में अब तो पत नहीं

द्वार घरों के मुक्त हैं,
आया अभी महत् नहीं,

सुन लो बात ही बात है,
दूसरी कोई लत नहीं

उठती है जो जवानी तो,
होती कदापि नत नहीं

आँधी उड़ा के ले गई,
मुझ में तो वो सकत नहीं

जीते है, देख लेते हैं,
इच्छा फली सतत नहीं

चीजें वही हैं आज भी,
य' क्या कि अब वो सत नहीं

होगी स्वतंत्रता जरूर,
होंगे विचार हत नहीं

रियाज है जी की लय नहीं है
वसंत का हर समय नहीं है

अभी चमक भी है, लालिमा भी
पर इतना ही तो उदय नहीं है

पुकार फिर शांति की उठी है,
मनुष्य-जीवन अभय नहीं है

जो मिलने आए है उन से कह दो
कि आज मुझ को समय नहीं है

किसी तरह कल जरूर होगा,
जो आज उन के हृदय नहीं है

य' फूल जो काल छोड़ जाए,
मगर व' इतना सदय नहीं है

बहुत हुआ, अति बहुत बुरी है,
सहे बला मेरी, भय नहीं है

व' आए, देखा कि जीत पा ली
कहाँ रूप की विजय नहीं है

मैं काल को किस तरह मनाऊँ
बड़ा क्रूर है सदय नही है

युवक थे हम भी, कहा बड़ों ने
कि युवकों में अब विनय नही है

काम अपना बनता हो जिस से उस से
बिगाड़ करना तो नय नहीं है

अगर तू झुकना भी सीख जाए
तो यह न होगा कि जय नही है

त्रिलोचन अपने तईं भला बन
व' कौन है जिस में पै नही है

शब्द वे भाव कहाँ पाते हैं
और का और ही सुनाते हैं

हम ने आज उन को बुला भेजा है,
बात पर भी, सुना है, आते हैं

दुःख हो, खेद हो, निराशा हो,
जो हैं गायक, वे गान गाते हैं

आज बाजार वे गए कह कर,
देखिए क्या ख़रीद लाते हैं

अपनी इच्छा से आ गए ये हम,
अपनी इच्छा से चले जाते हैं

वह दिखाने का रूप है अपना,
हम जो आज आप को दिखाते हैं

रूप यह, रंग यह, चलावा यह,
हम भी इनसान को बनाते हैं

देखिए भी, स्वतंत्र हैं ये लोग,
बोलना हम इन्हें सिखाते हैं

धोखा देते है आप को खुद को,
लाभ वे कितने दिन उठाते है

जी को संतोष जरा होता है,
हम जो हर बात पँ गम खाते हैं

दिल में उन के कमी जगह की नहीं,
वे त्रिलोचन को भी बुलाते है

आगमन अपना लिखा देता है,
प्रेम सब नेम सिखा देता है

भेद सब अपने का पराए का,
स्वार्थ दुनिया को दिखा देता है

क्या भलाई है क्या बुराई है,
ज्ञान ही इस का पता देता है

मैं ने आतिथ्य भी निहारा है,
बाट में पलकें बिछा देता है

आँसुओं से ही दिल ने पाया था,
आँसुओं से ही विदा देता है

कैसी तेरी पतंगबाज़ी है,
काट कर डोर गिरा देता है

क्यों शरण दी उसे बिठाया क्यों,
और क्यों आज उठा देता है

इन को अच्छी तरह सँभाल के रख,
अपने मोती क्यों लुटा देता है

हम त्रिलोचन तुझे बताएं क्या,
तू तो दुनिया को बता देता है

यह भी जीने की एक सूरत है,
मन के मंदिर में उन की मूरत है

प्रेम में दिन घड़ी नहीं कुछ भी,
व्यर्थ उस के लिए मुहूरत है

जिन के आगे अगम अँधेरा है,
साथी उन का हूँ तो अनागत है

मान रखने के लिए मरना है
जीने का बस इसी लिए व्रत है

आन पर अब भी लोग मिटते है,
धैर्य है, तेज है, अभी सत हैं

बस जरा याद तुम दिला देना,
भूल जाने की मुझे आदत है

यह प्रतीक्षा है और व्याकुलता,
आप आ जायें यहाँ स्वागत है

हम हृदय की व्यथा नहीं कहते,
भेद रखना हो यहाँ संगत है

वे जो नाम अपना लिया करते हैं,
हम समझते हैं, यह मुहब्बत है

आप प्रतिबंध लगा दें मुख पर
दृष्टि पर, किंतु वह असंगत है

प्यार अच्छा है त्रिलोचन वैसे,
आए प्राणों पै तभी साँसत है

आप कहते हैं तो अपनी भी सुना देता हूँ मैं,
दिल के अंदर जो छिपा है वह दिखा देता हूँ मैं

हूक उठती है हृदय में और गा देता हूँ मैं
आप उत्सुक है कहाँ से भाव ला देता हूँ मैं

दुःख भी है वस्तु कोई चौंकते है सुन के वे,
अपने गीतों 'में उसी का क्यों पता देता हूँ मैं

एक था सिद्धार्थ सुख को छोड़ संन्यासी हुआ,
आज भी दुख है कहों चलिए दिखा देता हूँ मैं

जी कड़ा कर लें, कभी संसार कोमल का नहीं
अपना अनुभव ऐसा ही है यह बता देता हूँ मैं

बच के चलते है इधर मालूम यह मुझ को हुआ,
उन को अपनी आपबीती से डरा देता हूँ मैं

आज वे आएँगे देखे क्या यहाँ उल्लास है,
चिन्ह जो अवसाद के हैं सब हटा देता हूँ मैं

आइए स्वागत है, बंदनवार तोरणद्वार हैं,
बेलबूटे और फूलों से सजा देता हूँ मैं

आप का लावण्य इतना था कि मानस था भरा,
आँसुओं की राह से उस को बहा देता हूँ मैं

आप भी तो देखिए कुछ है भी अंदर या नही,
लीजिए अब आज से परदा उठा देता हूँ मैं

किस लिए संकोच इतना किस लिए इतनी झिझक
आइए भीं राह में पलकें बिछा देता हूँ मैं

हृदय सिंहासन तुम्हारा है मुझे मालूम है
क्या बुरा है यदि तुम्हें उस पर बिठा देता हूँ मैं

क्या करूँ झोली अगर ख़ाली की ख़ाली ही रही,
अपने बस की बात है फेरी लगा देता हूँ मैं

थी तुम्हारी वह उपेक्षा जो नगर उजड़े मिले,
तुम समझते हो कि यह यों ही उड़ा देता हूँ मैं

लोग ले ले कर शिकायत अब जो आ जाते है द्वार,
तुम को लगता हैं उन्हें यह सब सिखा देता हूँ मैं

पेड़ ये नंगे खड़े है डाल में पत्ता नही,
किस तरह ऋतुराज को पतझर दिखा देता हूँ मैं

मैं तुम्हारे द्वार जो आता नहीं यह बात है,
तुम कहोगे राह दुनिया को दिखा देता हूँ मैं

जो तुम्हारी याद आई तो उसी में खो गया,
रात की तो बात क्या दिन भी बिता देता हूँ मैं

खेल की भी हार से जी उन का रंजीदा न हो,
इस लिए ख़ुद हार कर उन को जिता देता हूँ मैं

कोई देखे या न देखे काम अपना हो गया,
घोर तम के देश में दीपक जला देता हूँ मैं

यह नही हैं वह नही है यह कहा ही जायगा,
जानता हूँ ख़ूब क्या देना है क्या देता हूँ मैं

जो करूँ मैं वह करे संसार, यह मंशा नहीं,
काम हैं अपने सभी के प्रेरणा देता हूँ मैं

जितने बाजे हैं सभी में कुछ न कुछ स्वर आयगा,
अपनी सारंगी जो लेता हूँ बजा देता हूँ मैं

आप यह वह ढूंड कर हैरान जी भर हो लिए,
मेरी ही है वह जो जीवन की कला देता हूँ मैं

यों बड़ा चंचल है कहने में कभी आता नहीं,
आप के गीतों में उस मन को टिका देता हूँ मैं

रोकना जिस का कठिन है, जो चला ही जायगा,
मुसकरा के उस बटोही को बिदा देता हूँ मैं

जानता है तू त्रिलोचन क्या फ़क़ीरी रंग है,
क्यों नगर में घूमता हूँ क्यों सदा देता हूँ मैं

रुका कब किसी दिन पवन चल रहा है
पवन है उधर दीप भी जल रहा है

किसी को किसी का उदय खल रहा है,
कहीं जाल रच कर कोई छल रहा है

निरे दु:ख से हाथ आने को है क्या,
चढ़ा सूर्य जो इस समय ढल रहा है

न मध्याह्न की चौंध में भूल जाओ,
अँधेरा कहीं छाँह में पल रहा है

डरें तो डरें संकटों से कहाँ तक
भले इस समय व्यर्थ कर बल रहा है

बुरा हो मगर ढंग बदले तो कैसे,
तुम्हें खल रहा है, उन्हें खल रहा है

त्रिलोचन समय-वृक्ष का रंग देखो,
इधर फूल फूले उधर फल रहा है

न मेरी बात में आओ, न उन की बात में आओ
लगाने लेप ममता का कभी आघात में आओ

गरज़ के बावले सब है कहाँ पहले थे जो अब है,
जो हलचल देखना चाहो तो तुम उत्पात में आओ

तुम्हें मैं ने बुलाया था बुला कर कह सुनाया था,
जो धीरज देखना चाहो तो तुम पविपात में आओ

प्रदर्शन है दिखाऊँ क्या दिखावट में सिखाऊँ क्या,
सहज को देखना हो तो ठहर के रात में आओ

कहाँ क्या क्या दिखाना है कहाँ क्या क्या सुनाना है,
मनुज को जान लोगे तुम जो यातायात में आओ

मनुज मिट मिट के बनता है कभी बन बन के तनता है
सचाई देख पाओगे जो वज्राघात में आओ

अदिन में जो जगे अब तक वही व्रत में लगे अब तक,
त्रिलोचन यह समझना हो तो झझावात मे आओ

आशा जो कहीं देखी तो धाया यहाँ वहाँ
अंतर की थाह लेने को गाया यहाँ वहाँ

अपनी कहूँ तो क्या कहूँ अच्छा हो छोड़ दो,
धक्का ही था खाने को जो खाया यहाँ वहाँ

अच्छा कोई ख़राब कोई दो ही ढंग हैं,
दोनों तरह का रूप तो पाया यहाँ वहाँ

देखा कहीं जो बोझ से दबते किसी को भी
नजदीक जा के कांध लगाया यहाँ वहाँ

निश्चित पड़ के सोए किसी को कहीं देखा,
जाते समय को देख जगाया यहाँ वहाँ

मालूम है क्या किस जगह कर सकता हूँ अच्छा,
सिर पर उसी का बोझ उठाया यहाँ वहाँ

जगिए हुआ है भोर सूर्य की ध्वजा चढ़ी,
घर घर में समाचार सुनाया यहाँ वहाँ

ताकत शरीर में थी और मन में थी तरंग,
किस का न काम लग के कराया यहाँ वहाँ

यह प्रेम था कि प्राण मुर्दे में पहन गया,
जिस जिस से मिला भेद बताया यहाँ वहाँ

किस बात पर बिगाड़ किसी से कहो करूँ,
बस अपने घर का रंग बनाया यहाँ वहाँ

अपने हो तुम से परदा करे कौन त्रिलोचन,
फल अपने कर्म का ही दिखाया यहाँ वहाँ

कुछ बात है कि आज भी हारा नहीं हूँ मैं,
सौभाग्य और सिद्धि का प्यारा नही हूँ मैं

आई तो मीच कितनी वार पर चली गई,
उस के लिए भी काम का चारा नही हूँ मैं

काल-प्रवाह देखा तो लेकिन अलग रहा,
सच कह दूँ बात, बुद्धि का मारा नही हूँ मैं

मेरे लिए संसार, स्वजन, प्राण तज दिए,
फिर कैसे कह दूँ आज तुम्हारा नही हूँ मै

जो जी का स्रोत है कभी सूखेगा वह जरूर,
कुछ ब्रह्मपुत्र नद की तो धारा नहीं हूँ मे

रोता हूँ अपने आप को दुनिया को देखूँ क्या,
अपने लिए भी आप सहारा नही हूँ मैं

अपने हृदय मे स्थान मुझ को दो तो त्रिलोचन
क्या दुःख जग की आंख का तारा नही हूँ मैं

कोकिल ने गान गा के कहा आ गया वसंत
आमों ने मौर ला के कहा आ गया वसंत

क्यों मुझ को छेड़ती है हवा बोल बार बार,
उस ने ज़रा बल खा के कहा आ गया वसंत

हर टहनी में जीवन के नए पत्र आ गए,
पीपल ने दल दिखा के कहा आ गया वसंत

वे पत्र गए, जायँ, फूल तो नए पाए,
सिर नीम ने उठा के कहा आ गया बसंत

बस्ती से दूर मुझ से बताया बबूल ने,
हम ने भी फूल पा के कहा आ गया बसंत

खेती हुई तयार रंग भी निखर चला,
कुछ वायु ने समझा के कहा आ गयाब संत

मैं ने प्रभात से कहा बदले हुए हो आज,
तो उस ने मुसकरा के कहा आ गया वसंत

चौताल की लहर में बोल ढोल के उठे,
गाँवों ने फाग गा के कहा आ गया बसंत

पहले की तरह आज भी फिर रेंड़ गड़ गए,
हर कंठ ने गा गा के कहा आ गया बसंत

तुम हो सुखी सुखी रहो मत छेड़ो दुखी को,
कोयल ने यह सुना के कहा आ गया बसंत

दुनिया के राग-रंग में गाते है त्रिलोचन,
हम ने पता लगा के कहा आ गया बसंत

अपनी मंजिल भी बिना जानें चला है कोई
क्या सभी के लिए दुनिया मे भला है कोई

वे सुनेगे तो कहेंगे मुझे मालूम न था,
याद में उन की जैसे हिम हो गला है कोई

आ लगे अब तो, कहाँ जानते थे हम पहले,
प्रेम आनंद नही है व' बला है कोई

साँचे से जो जहाँ निकला उसे हम ने देखा
एक सा पाया नही भिन्न ढला है कोई

जिस ने इच्छा के मुँह को भूल कर न जोहा हो,
क्या कही दुनिया में ऐसा भी भला है कोई

फूल देखे है, वर्ण गंध ख़ूब देखा है,
सुख में कोई है तो काँटों में पला है कोई

खोट कौवे की कौन है अगर व' कौवा है,
अपनी साँसो में नही इतना खला है कोई

वह जो बस देख के दिल सब का छीन लेते है,
हम ने समझा है यही, उन मे कला है कोई

यह जरा हलका है कुछ कुछ सुगंध जैसी है,
सोना हर्गिज नही मिट्टी का डला है कोई

मेरी शुभ कामना है आप चाहते है तो,
यों कामना से नहीं वृक्ष फला है कोई

यत्न कर यत्न, यों पूजा पै बैठ जाने से,
संकट आए है, नही इस से टला है कोई

फूल खिलते है और भेद खोल जाते हैं,
हम ने अब तक न सुना उन का छला है कोई

बात क्या कहते हो, तुम से डरे त्रिलोचन जो,
मैं न मानूंगा, दूध का ही जला है कोई

किसी को कहीं मैं ने तुझ सा न देखा,
बुरा जो न देखा तो अच्छा न देखा

प्रशंसा परार्थानुसंधान की है,
कहाँ स्वार्थ का रंग गहरा न देखा

दवा की दवा लाभ है, आ रहा है,
अभी तक यं व्यापार मदा न देखा

जवानी जो आई तो क्या धूम लाई,
गई तो गई उस का साया न देखा

कहीं कोई भी रग देखा तो भूला
मगर विश्व का रंग पक्का न देखा

लगा मुझ को आघात दुख भी हुआ ही,
तुम्हें अपने वादे का सच्चा न देखा

मिले स्वर्ण सौरभ तो कितना भला हो,
कभी आज तक मैं ने ऐसा न देखा

इधर सोच क्या है त्रिलोचन के जी में,
शरीर उस का पहले का आधा न देखा

चुप क्यों न रहूँ हाल सुनाऊँ कहाँ कहाँ,
जा जा के चोट अपनी दिखाऊँ कहाँ कहाँ

जो देखा है अच्छा हो उसे दिल भी न जाने,
इस जी की बात जा के चलाऊँ कहाँ कहाँ

रोने में, क्या धरा है भूतकाल था भला
किस किस गली में उस को बुलाऊँ कहाँ कहाँ

तुम कहते हो तो ठीक, मुझे जीना ही होगा,
यह भी जरा समझा दो कि जाऊँ कहाँ कहाँ

मैं क्या करूँ, सुनती है अगर दुनिया तो सुन ले,
तुम सीमा मत रचो कि मैं गाऊँ कहाँ कहाँ

जो मेरे दिल का भेद है व' भेद ही रहे,
मैं उस को सब की आँख में लाऊँ कहाँ कहाँ

क्या गम जो स्वर उठे तो कहीं जा के रहेंगे,
इस दर्द की लहर को छिपाऊँ कहाँ कहाँ

सुन आए है बनी जो, वे बिगड़ी भी सुनेंगे,
उम्मीद पर ही साज बजाऊँ कहाँ कहाँ

मानस तो हैं लेकिन कहीं रस होता त्रिलोचन,
मैं जी की ज्वाल जा के बुझाऊँ कहाँ कहाँ

बीतते जाते हैं दिन जी को कुछ आराम नही,
क्या करूँ क्या न करूँ, मन का कोई काम नहीं

फ़िक्र में हूँ कि आज कल में जवाब आएगा,
सोचता रहता हूँ फ़ुरसत नहीं, विराम नहीं

देख लेता हूँ सुब्होशाम की मैं रंगीनी,
रंग मेरे ही लिए सुब्ह नही शाम नही

और भी नाम है दुनिया में मगर मेरे लिए,
नाम है एक तेरा और कोई नाम नही

मै ने इनसान को देखा है रात में दिन में,
बात जो कहता हूँ अनुभव की है इलहाम नही

हम जो तेरी गली में अब भी आते जाते है,
बात इतनी है कि उस ओर हैं बदनाम नही

त्याग की बात उठी थी कि तुले प्राणों पर,
और क्या त्याग करेंगे जिन्हें धन-धाम नही

अभ्युदय जो मनुष्य के लिए सुलभ कर दे,
देखता हूँ कही जीवन में वह आयाम नही

शांति की बात वे करते है त्रिलोचन इस से,
बात भी बनती है लगता है कोई दाम नहीं

तू खड़ा है जिस के स्वागत में व' क्त का आ चुका
जो सुदिन तू देखता था वह कभी का जा चुका

राह चलते देखता हूँ हो गया पूरा हिसाब,
खो चुका मैं अपना खोना और पाना पा चुका

काम जो मुझ को मिला था मैं ने पूरा कर दिया
और जो लाना मुझे था देखिए भी ला चुका

आप पंचम के लिए बरसात में क्यों है अधीर,
दिन गए वे और कोकिल गान अपने गा चुका

तू हताश न हो त्रिलोचन स्वर ग़ज़ल का ख़ूब है,
सब के हृदयों में बसा है सब के जी को भा चुका

सोच कर कर के खाम होता है,
धैर्य रखने से काम होता है

काम उस का नहीं अटकता है,
जिस की अंटी में दाम होता है

चित्त चूके नहीं करे कर बल,
दाहिने उस के राम होता है

बारी बारी से इस धरातल पर,
अंधकार और घाम होता है

अब बसाते नहीं उजाड़ते है,
कहते है इस से नाम होता है

दुःख क्या है जो पास पैसा है
ऐसे हाथों में जाम होता है

खोट है दीन में त्रिलोचन क्या,
दैव क्यों उस से वाम होता है

भटकता हूँ दर दर कहाँ अपना घर है,
इधर भी, सुना है कि उन की नजर है

उन्होंने मुझे देख के सुख जो पूछा,
तो मैं ने कहा कौन जाने किधर है

तुम्हारी कुशल कल जो पूछी उन्होंने,
तो मैं रो दिया कह के आत्मा अमर है

क्यों बेकार ही ख़ाक दुनिया की छानी
जहाँ शांति भी चाहिए तो समर है

जो दुनिया से ऊबा तो अपने से ऊबा,
य' कैसी हवा है, य' कैसा असर है

य' जीवन भी क्या है, कभी कुछ कभी कुछ,
कहा मैं ने कितना, नहीं है मगर है

जो इस बात पर किंतु तुम ने लगाया,
तो उत्तर हमारा भी उस पर अगर है

बुरे दिन में भी जो बुराई न ताके,
वही आदमी है वही एक नर है

त्रिलोचन यह माना बचा कर चलोगे,
मगर दुनिया है यह हमें इस का डर है

अकस्मात् देखा अजब चीज़ पा ली
तुम्हारी हँसी याद कर ली चुरा ली

कहा तुम ने लज्जा करे और कोई,
य' क्या बात थी जिस से गर्दन झुका ली

भटक कर इधर आ गया तुम य' बोले,
हँसी देख मेरी क़सम तुम ने खा ली

उधर दुख इधर दुख मिले हम जो दोनों,
तो आँखों से कानों की सुन ली, सुना ली

व' आए तो आनंद भी लौट आया,
व्यथा जो लिखी थी हँसी में छुपा ली

कहेंगे, अभी आए हो, बैठ भी लो,
उठानी थी तकलीफ़ जितनी उठा ली

भरोसा तुम्हारा किया जो जरा सा,
यही भूल की और आफ़त बुला ली

तुम्हें क्यों बुला कर यहाँ कष्ट देता,
स्वयं सह लिया बात अपनी बना ली

मुझे हाथ अपने दिखा कर व' बोले,
जरा देखो मैंने भी मेंहदी रचा ली

भुलावा किसी और को देना अब से,
बहुत भूल मैं ने भी देखी, दिखा ली

त्रिलोचन यही कम नहीं तुम ने अब तक,
अगर लाज दुनिया में अपनी बचा ली

जीवन, समुद्र देख रहा हूँ अपार है
उत्तुंग ऊर्मि-शृंग कहाँ वार पार है

लड़ते हैं इस लिए कि और राह नहीं है
लड़ते रहेंगे युद्ध में क्या चीज हार है

दुख भूल गए, पी गया अपमान भी कितने,
मुझ से न कहो भूल के जीवन असार है

क्षिति, जल, अनल, अनिल तथा आकाश हैं घेरे,
किस किस से बचूं मुझ पै सभी का उधार है

जी में उठी उमंग नाव ले के चल दिया,
देखा भी नही कोई कहो कर्णधार है

जलयान ले चला हूँ अर्थ से भरे हुए
सागर समझ गया है कोई शहसवार है

इनसान क्या है, मिट्टी का पुतला, बना मिटा,
य' दिव्य ज्योति भी है अगर उस में प्यार है

था प्यार वह भी बाढ़ सा आया निकल गया,
अब याद रह गई है स्वरों का उतार है

देखा है त्रिलोचन को भीड़ से हमेशा दूर,
क्या दर्द है, क्या दुःख है, क्या जी पै मार है

बिगड़ा है दिल तो राह पै लाना ही पड़ेगा,
लाचारी है, य' दर्द सुनाना ही पड़ेगा

न जाऊंगा, क्यों जाऊँ, अब क्यों याद करते हैं
कहता है कोई दिल से कि जाना ही पड़ेगा

बोले व' तुम्हें दर्द है, मालूम है मुझे,
जलसा य' तुम्हारा ही है गाना ही पड़ेगा

विश्वास उन का और अशक्ति अपनी क्या कहूँ,
लिखते है तुम्हें मेरे घर आना ही पड़ेगा

कहलाया है उन्होने कि विश्वास के लिए,
तुम को हृदय भी अपना दिखाना ही पड़ेगा

हम उन को देखते है और अपने घर को फिर
आए है तो अब उन को बिठाना ही पड़ेगा

हठ उन का कि बैठे हैं तो अब सुन के उठेंगे,
कुछ भी हो हाल अब तो बताना ही पड़ेगा

जो अपने आप लाज की परवा नहीं करता,
होगा कोई दिन उस को लजाना ही पडेगा

तुम आज क्या समझोगे घिरे हो समूह से,
कल जानता हूँ मुझ को बुलाना ही पड़ेगा

आनद उन के घर है मुझे अपने दु:ख को,
कुछ सावधान हो के दबाना ही पड़ेगा

उन के भी मन में प्यार है देखा है त्रिलोचन,
दुनिया के लिए वेश बनाना ही पड़ेगा

अभ्र अब कुछ खुला खुला सा है
विश्व अब भी परंतु प्यासा है

अंत देखा नहीं प्रतीक्षा का,
बात कुछ है कि फिर भी आशा है

उन के जी में उमंग आ जाए,
मौन यदि आज मेरी भाषा है

हँसना रोना अनंत देखा है,
ख़ूब संसार का तमाशा है

दिन तुम्हीं क्यों पसंद का पाओ,
स्वप्न-सुख भी यहाँ दुराशा है

तुम को मैं ढूंढ किस तरह पाऊं,
कुछ अँधेरा है कुछ कुहासा है

मैं ने बाज़ी अभी कहाँ पाई,
आज उलटा ही उलटा पासा है

कोई कच्चाई जिन में होती है,
रंग कहते है अच्छा ख़ासा है

कल बुराई सुनी त्रिलोचन की,
देखो तो आदमी भला सा है

तड़पता हूँ मगर मैं नाम तेरा ले कहाँ पाया,
कभी तेरे किनारे नाव अपनी खे कहाँ पाया

मेरा दुख देख कर कितने व्यथा में डूब कर आए,
उन्हें भी अपने जी का भेद खुल कर दे कहाँ पाया

कभी जो स्वप्न देखे थे कभी जो सत्य माँगा था,
वही तो सिद्धि का फल था उसे उन से कहाँ पाया

जिन्हें अपना समझता था समझ कर प्रीति करता था,
उन्हें प्रतिबिंब जैसे पथ पर चलते कहाँ पाया

फलों की चाह में मैं ने लगाया कल्पतरु कोई,
बराबर अश्रु से सींचा कभी फलते कहाँ पाया

चला मैं विश्व के पथ पर नहीं कोई मिला तत्पर,
जिसे पीछे नहीं पाया उसे आगे कहाँ पाया

कभी कुछ देख लेती तू इसी से स्फूर्ति देती तू,
तुझे मैं ने विजन पथ पर कभी अपने कहाँ पाया

इधर भी आ इधर भी आ हृदय के गान जी भर गा,
भटकता रह गया सच मैं कभी सुनने कहाँ पाया

त्रिलोचन के सभी गाने हृदय के भाव पहचाने,
यही तो तत्त्व है उस का कही चुनने कहाँ पाया

भेद जीवन के पा गया कोई,
सूने मन में जो आ गया कोई

तुम न आओ तो मुझे ही बुला लो,
बात जी को सुना गया कोई

कुछ थकन थी किनारे बैठा था,
रंग आ कर दिखा गया कोई

रूप-रूपक यही तो देखा है,
और देखो बता गया कोई

साँझ के बादलों का लहराना,
स्वर्ण उन पर चढ़ा गया कोई

जान पहचान की तो पूछो मत,
मन में आते ही छा गया कोई

राह चलते न जाने कब क्या हो,
देखा, बोले, सुहा गया कोई

हम ने खोया बहुत तो कुछ पाया,
राग जीवन के गा गया कोई

दे नए गीत उठ त्रिलोचन अब,
फिर तेरे द्वार आ गया कोई

सच यही है कि आ गए यों ही,
सामने तुम को पा गए यों ही

गाना क्या है हम को क्या मालूम,
भाव आया तो गा गए यों ही

फाग के दिन हैं ये मल्हार के नहीं,
मेघ क्यों आ के छा गए यों ही

बोलती भी उषा तो क्या कहना
हम हवा को सुना गए यों ही

ध्यान अपनी पहुंच का लाते क्या
देखा उन को लुभा गए यों ही

देखने वाले समझें वे तो बस,
अपनी झाँकी दिखा गए यों ही

अब तो अपने को बुरा लगता है,
पहले वे मन को भा गए यों ही

उन से बिछुड़न, कभी कहना भी मत,
सोच के हम सुखा गए यों ही

भाव भाषा के त्रिलोचन मोती,
मुट्ठी भर भर लुटा गए यों ही

बंधनों का मोह जल्दी छोड़ देना चाहिए,
विश्व से संबंध अपना जोड़ देना चाहिए

मन जिधर जा जा के हो जाता हो बिलकुल निस्सहाय,
मार्ग अपना बस उधर से मोड़ देना चाहिए

जाल की गिनती नहीं है जाल पर भी जाल हैं,
पर मुमुक्षा है तो सब को तोड़ देना चाहिए

ये सभी मृत्पात्र कच्चे हैं, करोगे इन का क्या
काम इन का हो गया तो फोड़ देना चाहिए

जो जले तप-ताप से अपने त्रिलोचन उन को तो,
प्रेम पावन और शीतल क्रोड़ देना चाहिए

वे भी जीते हैं जिन्हें ठौर ठिकाना भी नही,
राह चलते है कहीं पाँव टिकाना भी नहीं

दर्द आता है तो अब होश चला जाता है,
तुम को अवकाश नहीं मुझ को सुनाना भी नहीं

और भी धंदे हैं क्यों चंग पर चढ़ाते हो,
मानना उन को नही मुझ को मनाना भी नही

सुख कोई चीज है सुनने को सुना है मैं ने,
मुझ से पृथ्वी ने कहा मैं ने तो जाना भी नही

कह दिया वक्त नहीं था नही तो आ जाता,
कोई अनुशोच नही कोई बहाना भी नहीं

भूल जो मुझ से हुई हो उसे भुला देना,
एक अनुरोध किया तुम ने व' माना भी नही

गीत संगीत उन्हें किस-लिए सुनाते हो,
जिन को दो जून कभी मिलता है खाना भी नही

बातें एक ओर काम एक ओर वैसे हम,
आए बातों में नहीं और अब आना भी नही

हम को आँखों से पता कान का लग जाता है,
दुखड़ा जिस तिस से त्रिलोचन यहाँ गाना भी नहीं

आज मधु मास आ रहा है फिर
और पिक गान गा रहा है फिर

तुम ने भव को अभी कहाँ देखा,
भाव क्या क्या दिखा रहा है फिर

और देखो उमंग आने दो,
रंग यौवन दिखा रहा है फिर

आपबीती को छोड़ कर क्या है,
दुख वही तो सुना रहा है फिर

आर्त हो हो के टीस से घायल,
घाव अपने दिखा रहा है फिर

छेड़ कर आज मन के तारों को,
राग कोई उठा रहा है फिर

कल नहीं सुन के लौट आया था,
मन वही आज जा रहा है फिर

क्या पता बात कुछ बिगड़ हीं जाय,
डर यही मुझ को खा रहा है फिर

व्यथा कब मुझ को साँस देती है,
बात किस को चला रहा है फिर

तुझ को वृष ने बहुत सताया है,
मेह आषाढ़ ला रहा है फिर

ले के उपहार चैत घर घर में,
बात बिगड़ी बना रहा है फिर

फूल ऋतुराज को मिले, मन भी
नए विश्वास पा रहा है फिर

बात क्या कह दी त्रिलोचन तुम ने
रंग जीवन में आ रहा है फिर

और जैसा कर रहे हैं तू न कर,
स्वार्थ के सीसे से भारी भू न कर

दुख नहीं है भूत कोई जान ले,
और अब से मंत्र पढ़ के छू न कर

उस के घर में जब वसंतोल्लास है,
तब कहें कोयल से क्यों कू कू न कर

होली जलती है तो अपनी शान से,
कोई कहने जाय क्यों धू धू न कर

आदमी वह आदमीयत जिस में हो,
आदमी को देख कर पू पू न कर

बन जा संबल, फूल फल, मलयज, प्रकाश,
पथिक से तूफान सा हू हू न कर

हम त्रिलोचन तुझ से कहने वाले थे,
और कुछ कर बात का जादू न कर

अगर वे इस तरफ आएँ तो हम को भी दिखा देना,
यथोचित रीति शिष्टाचार भी थोड़ा सिखा देना

अगर परिचारकों की उन को आवश्यकता हो कोई,
तो मेरा नाम भी उम्मीदवारों में लिखा देना

अगर वे पूछ बैठें कोई मेरी बात करता है,
तो उन के प्रेमियों में नाम मेरा भी मिला देना

मुझे अच्छी तरह मालूम है कठिनाइयाँ क्या है,
गिरा, गिर कर उठा, सीखा न मैं ने सिर झुका देना

गया उन के यहाँ, अच्छी सभा थी, मैं भी जा बैठा,
लहर प्राणों की वह, उस में सभी का मन बहा देना,

तरस आता है सुन कर कैसी लाचारी है कुकनुस को,
कि गाते गाते तन के साथ घर अपना जला देना

त्रिलोचन बात उलटी हो गई, हम क्या समझते थे,
रहा निष्फल कलेजा चीर कर अपना दिखा देना

हाथ और पांव जिस का चलता है,
आया संकट भी आप टलता है

क्यों अंधेरे की शिकायत हो तुम्हें,
सूर्य जब सर्वदा निकलता है

बात कह कर स्वयं मुकर जाना,
ढंग यह किस को नहीं खलता है

एक तो काम कहीं पाता है,
दूसरा हाथ यों ही मलता है

ताप का काम और है ही क्या
स्पर्श हो और हिम पिघलता है

अच्छा जाने दो कल का दिन देखो,
मन भी क्या चाल मुझ से चलता है

खूब संसार का चलावा है,
हँस के मिलता है जी में जलता है

दिन चढ़ा भी बढ़ा भी अब देखो,
दूसरी ओर आप ढलता है

क्यों त्रिलोचन अधीर हो कोई,
काल पर अपने वृक्ष फलता है

दिन जो आलस अकाज का ही है,
ढंग जीवन की लाज का ही है

लोमहर्षक नृशंस हत्याकांड,
देखूं क्या पत्र आज का ही है

बुरा भला उच्च नीच कैसा भी,
व्यक्ति कुछ हो समाज का ही है

लोग फूलें फलें विकास करें,
इस का अनुबंध राज का ही है

दूर निस्सार को उड़ा देना,
काम देखा है छाज का ही है

कंटकाकीर्ण और संकट का,
मार्ग जगती में ताज का ही है

जीते हैं आज हम त्रिलोचन यह,
बल रगों में अनाज का ही है

तेरे गगन में मेघ बन के छा गया हूँ मैं,
कितना समीप से समीप आ गया हूँ मैं

तेरी गली में गीत मन के गा गया हूँ मैं,
स्वर की पहुँच में आज तुझे पा गया हूँ मैं

प्राणों से अपने ऊब उठा हूँ करूँ भी क्या,
लाचारियाँ भी होती हैं पछता गया हूँ मैं

कुछ भी नहीं न सही ख़ाली हाथ भी अच्छे
तुझ को अभाव भाव सब दिखा गया हूँ मैं

स्वयमेव कोई यदि कहीं उपहार बन के जाय,
तो यह उसे अभाव में समझा गया हूँ मैं

पथ कोई हो, कैसा भी कठिन हो, सुगम्य है,
अपने दिनों में औरों को दिखला गया हूँ मैं

मुझ पर जो पड़ी पड़ चुकी पर और तो बचें,
उपलों से अपनी राह में टकरा गया हूँ मैं

आँसू नहीं थे रक्त तो था ही शरीर में,
आवेश में पथ पर वही बिखरा गया हूँ मैं

करुणा की भीख मुझ को कभी मत दो त्रिलोचन,
कुछ बात है कि भीख से उकता गया हूँ मैं

प्रेरणा देता रहेगा प्यार तेरा,
लोक भूलेगा नहीं उपकार तेरा

बात क्या है जब तेरे दिल में जगह है,
क्यों जगह देता नही संसार तेरा

जो उपेक्षा मुझ को दिखलाती है तू,
है अलौकिक लोक में व्यवहार तेरा

ठोकरें भी खाता हूँ गिरता भी हूँ
तू बुलाए कम नहीं आभार तेरा

भूल मेरी थी दिखाई दे गई,
अब घटाऊँगा नहीं उपकार तेरा

तू तू मैं मैं से तुझे परहेज है,
जानता हूँ और है संस्कार तेरा

और कुछ कहता कहाँ था होश मुझ को,
नाम ही मैं ने लिया हर बार तेरा

प्रेमियों को कष्ट में देखा कहीं तो,
मुझ को आया ध्यान बारंबार तेरा

कौन चिंता भी करे संसार की फिर,
यदि त्रिलोचन मुझ को है आधार तेरा

यदि तुम्हारे पास विष ही है तो ले आओ पिला दो,
प्यास मारे डालती है बन पड़े दम भर जिला दो

दुःख की लहरों के ऊपर सिर उठा कर मुसकराया,
कंज ने कब प्रार्थना की थी मुझे आ कर खिला दो

मुझ को विषकन्ये, कहाँ तक प्यार तुम अपना न दोगी,
शुष्क अधरों से अमृतभाषी अधर अपने मिला दो

प्रार्थना कितनी भली हो पर स्वयं क्या है करुण है,
हाथ कब अधिकार के प्रार्थी हुए हैं कुछ दिला दो

क्यों कही यह बात वीणापाणि ने तुम से त्रिलोचन,
आज ओ क़ुक़नूस, गा कर तार जीवन के हिला दो

गान कोई ख़ुशी के गाता तू
कुछ तो आनंद साथ लाता तू

अश्रु जैसे नहीं, हँसी भी नहीं,
लाभ क्या था जिसे दिखाता तू

गंधमादन के फूल दुर्लभ है,
मार्ग में कैसे पड़ा पाता तू.

दर्द आवाज में थिरकता है,
ऐसे में कैसे स्वर उठाता तू

दुख की कहानी भी कहा मत कर,
कहने सुनने से तोड़ नाता तू

आँसुओं की झड़ी जहाँ हर दम,
कैसे फिर भीगे बिना आता तू

बोल मीठे है त्रिलोचन इस से,
हो गया है जगत में दाता तू

अपनी बातों पर उन्हें कल दुख हुआ,
देखा अपने आप नीचा मुख हुआ

मन को बारंबार समझाया किया,
और बारंबार यह उन्मुख हुआ

दुख के दावानल से तू आक्रांत है,
उन के आँसू देख तुझ को सुख हुआ

हँस के वह बोले कि यह क्या बात है
ध्यान आया और तू संमुख हुआ

उन को चिंता है त्रिलोचन आजकल,
ऐसा क्या देखा कि तू अनमुख हुआ

हाल पतला है मेरा तुझ से बताऊँ तो क्या
दुख पुराना है नई बात सुनाऊँ तो क्या

ढंग आता हो नहीं गीत भी गाऊँ तो क्या,
दर्द पहलू में लिए तेरे घर आऊँ तो क्या

अपने चिथड़े समेट के बग़ल में रख छोड़े,
यह दिखाने की नहीं चीज दिखाऊँ तो क्या

वे न आए हैं न आएँगे इस तरफ़ हर्गिज,
फाड़ कर मुँह उन्हें पथ चलते बुलाऊँ तो क्या

उन के सौहार्द की सब लोग बात करते हैं,
जी को विश्वास दिलाने को मैं जाऊँ तो क्या

तुम को संतुष्ट रख सकूँ यथा तथा जी भर,
तुम भी कुछ खुल के कहो चीज मैं लाऊँ तो क्या

कितनी कोशिश की त्रिलोचन, करूँ भी क्या, बिगड़ी
बात बनती ही नहीं और बनाऊँ तो क्या

खर धार है बच बच के भी बहते हैं वार वार,
आप अपने हैं इसी लिए कहते हैं वार वार

मालूम है उस को भी बहुत देख चुके हैं,
तिनके को डूबते हुए गहते हैं वार वार

फिर पाँव उसी राह पर चले खिंचाव से,
क्या बात है जो दर्द को सहते हैं वार वार

दुनिया में ताप भी है मगर छाँह कम नहीं,
क्यों ताप से अपने को हम दहते हैं वार वार

ढहने दो, उठा लेना, बना लेना फिर नया,
घर भी कहीं देखा है क्या ढहते हैं वार वार

ममता कहीं देखी तो स्वयं मन नहीं माना,
सब मन के ताल पर ही उछहते हैं वार वार

देखा है त्रिलोचन को भी आनंद आ गया,
नश्वर जगत में घूम के रहते हैं वार वार

चाँदनी रात है, पग अपने तू बढ़ाए जा,
गान निर्जन को ही तरंग में सुनाए जा

जिस के होगी सहानुभूति वह तुझे देगा,
आँख वालों को घाव अपने तू दिखाए जा

छिप के रोते हैं जो औरों पै हँसा करते हैं,
हँसने वालों से भी हँस हँस के तू निभाए जा

ढंग अपना है तेरा और रंग भी अपना
बात अच्छी है, दोष औरों के छिपाए जा

साल, तू जा ही रहा है तो सुन, जो लाया है,
मन के कोने से असंतोष वह उठाए जा

शोरगुल में भी शांति मौन पड़ी रहती है,
चीख़ने वालों से बात इतनी तू बताए जा

देश ने, काल ने कुछ कम नहीं सताया था,
तू ही क्यों शेष रहे, आ मुझे सताए जा

तेरे तोते की पढ़न सुन के जी में आया है,
तुझ को अच्छा जो लगे वह मुझे पढ़ाए जा

गान जीवन का इत्र है अगर जीवन है फूल,
बास में उस की त्रिलोचन को तू बसाए जा

बहुत दिन बाद कोयल पास आ कर आज बोली है,
पवन ने आ के धीरे से कली की गाँठ खोली है

लगी है कैरियाँ आमों में, महुओं ने लिए कूचे,
गुलाबों ने कहा हँस के हवा से अब तो होली है

बधाई दे के, फागुन से कहा ऋतुराज ने देखो,
नए फूलो के जीवन से भरी यह अपनी झोली है,

इधर सूखे हुए वातावरण में सरसता ला दी,
अकेले एक कोकिल ने अमृत की धार घोली है

खिली है आज चंपा क्या सुगंध उस ने उठाई है,
व' कब तक छिप सकेगी पत्तियों मे कैसी भोली है

कहा लहरों ने तट से तुम बड़े गभीर हो माना,
ये छोटे जो उछलते हैं, क्षमा करना ठिठोली है

वसंत इस का बुरा मत मानना धरती की आदत है,
तुम्हें पहचान लेने के लिए नाड़ी टटोली है

झुकी आँखों को देखा तो समझ में आ गया मेरी,
ये आँखें है जिन्होंने पल में दुनिया सारी तोली है

त्रिलोचन हँस के औरों को हँसाओ तब तो हम मानें,
यह दुनिया घर के घेरे में बहुत बँध बँध के रो ली है

भूल भी जाओ ज़माने को भी जरा देखो,
एक के दोप को दुनिया में क्यों भरा देखो

कल की चिंता न करो, आज का जीवन जी लो,
आँखों के आगे है उपवन अभी हरा देखो

चिर प्रतीक्षित गुलाब का नहीं आया अब तक,
गुच्छा फूलों का अभी डाल पर धरा देखो

तुम को जीवन पसद हो तो करो कुछ ऐसा,
जिस से जीवन में जगत को हराभरा देखो

श्वेत केशों ने कहा कान में त्रिलोचन से,
तुम से अब दूर नही है अधिक जरा, देखो

बात मेरी जो मुझी से सुनो तो कैसा हो,
भाव जो कुछ हो मुझी से कहो तो कैसा हो

तुम जो अपने हो तो हम अपनी बात कहते हैं,
निंदा सुन कर भी अगर चुप रहो तो कैसा हो

तुम को देखा प्रसन्न जी प्रसन्न हो आया,
नित्य मुझ को प्रसन्न ही दिखो तो कैसा हो

जिंदगी देख ली, कड़वी है, बहुत ही कड़वी,
अपने स्वर से जो मधुर कर सको तो कैसा हो

दर्द जी का है, सुना है दवा नहीं इस की
हाथ माथे पै ज़रा फेर दो तो कैसा हो

सुधि जो आती है तो एकांत कहाँ रहता है,
शून्य एकांत ही एकांत हो तो कैसा हो

तुम को जीवन जो मिला है व' त्रिलोचन क्या है,
कुछ कहो भी, अगर ऐसा न हो तो कैसा हो

जिस से तुम ने कभी बात न की, वह प्यार तुम्हारा क्या जाने,
कभी मेल मिलाप किया ही नही, व्यवहार तुम्हारा क्या जाने

नदियों में डूबना, पर्वत से गिरना, अंधड से टकराना
पड़ता हो जिस को आए दिन उपकार तुम्हारा क्या जाने

संसार की निंदा कर कर के मन अपना बहला लेते हो,
तुम ने उस के लिए क्या किया है संसार तुम्हारा क्या जाने

हे मेघ, नदी वन पर्वत को सींच कर निकल तुम जाते हो,
मरुभूमि तृषातुर है, वह धारासार तुम्हारा क्या जाने

जो छोटेपन में छोटा है वह क्या अनत को समझेगा,
आकंठ स्वाथ में मज्जित सुषमाचार तुम्हारा क्या जाने

जो निराधार है अपने ही ऊपर जिस को विश्वास नही,
उस को कोई समझाए क्या, आधार तुम्हारा क्या जाने

दुख तुमको किसी पर किस लिए हो, यह बात त्रिलोचन अच्छी नही,
जिस की आंखों में पानी नही, आभार तुम्हारा क्या जाने

इन आँसुओं को वार वार कोई क्या करे,
बिगड़े दिनों में कुछ सुधार कोई क्या करे

तख़्ता न हो पुश्ता न हो, आधार कुछ न हो,
संमुख समुद्र हो अपार कोई क्या करे

बाढ़ आई है विपद् की, सभी डूब रहे हैं,
चिंता में अपनी फिर उबार कोई क्या करे

जब नून तेल लकड़ी समस्या हो तब हुआ,
ले कर कला को कुछ निखार कोई क्या करे

सब अपनी अपनी धुन में हैं दुनिया की राह में,
करुणा की यहाँ फिर पुकार कोई क्या करे

उत्साह बढ़ाए किसे इस का ख़याल है,
अपने ही दम से सिंधु पार कोई क्या करे

कोई सहानुभूति दे क्यों कवि को त्रिलोचन,
जब प्राप्ति ही न हो उधार कोई क्या करे

जीवन का सूत कच्चा है ऐसा न हो कि टूट जाए
माना कल्ही मिलोगे तुम प्राण जो आज छूट जाए

कहते हो जान अमोल है सब को दिखा दिया है क्यों,
जितने है द्वार सब खुले कोई भी आए लूट जाए

लेना जरा सँभाल के छूटा तो हाथ से गया,
टूटते दिल को देर क्या यों ही कही न टूट जाए

लाए अमृत ही यों तो हम अब क्या त्रिलोचन उस की बात,
घट ही जहर का हो गया फूटता है तो फूट जाए

कहूँ क्या अब आया इधर कैसे कैसे,
भटक कर शहर से शहर कैसे कैसे

तेरी राह में मैं अकेला नही था,
सुने राह में मैं ने स्वर कैसे कैसे

जो तेरे लिए एक हो के खड़े थे,
गए वे कहाँ और किधर कैसे कैसे

चिता पर चढ़े, क़ब्र में जा के सोए,
जगत को मिले हैं अमर कैसे कैसे

इधर शांति की प्यास जी में जगी है,
अभी देखने है समर कैसे कैसे

त्रिलोचन तुम्हें देख कर आज समझा,
कि कविता में आया असर कैसे कैसे

जी में जब ठान ली नजरों में तेरी आना है,
तब तो तू जैसे कहे वैसे मुझे गाना है

किस को विश्वास कहा करते हैं दुनिया वाले,
तू ने जब जो भी कहा मैं ने वही माना है

तुम को संकोच क्या है और विवशता क्या है,
बस अभी आए अभी बोले मुझे जाना है

पता मालूम नहीं पूछ सकता भी नहीं,
जी में यह बात बसी है कि तुझे पाना है

दिल जो आवारा हो गया है यही चिंता है,
जैसे भी हो अब इसे राह पर ही लाना है

घर से बाहर चरण रखे प्रथम प्रथम जिस दिन,
सिर हथेली पे लिए फिरते हैं यह बाना है

जन्म के दिन से कभी पास और कभी दूर,
मृत्यु को देखा है और देख के पहचाना है

भूल अपनी जो समझ जाते तो करते ही क्यों,
होनी हो के रही अब सोच के पछताना है

अब त्रिलोचन कुछ और कर हताश मत हो जा,
आप ही सोच कि इन बातों से क्या आना है

जिसे पूछने वाला कोई न हो वह प्यार तुम्हारा पा जाए
जो डूबने डूबने वाला हो लहरों से किनारा पा जाए

क्या पूछते हो कभी चैन नहीं कोई दम को कभी आराम नहीं
जो रोज सवेरा देखता है शायद है सहारा पा जाए

दुनिया की नदी को मँझाता हूँ हर घाट को जा कर देखा है
मन अब भी आशा थामे है क्या जाने उतारा पा जाए

तुम्हें इस की शिकायत किस लिए हो रोज़ी की तलाश किसे नहीं है
रोटी ही विजय है जीवन की यदि भूखा हारा पा जाए

उसे देखने वाले देखेंगे जिन्हें दिल है वही उसे समझेंगे
फ़ुरसत जो कभी मुसकाने की आफ़त का मारा पा जाए

घर औरों के जो बनाता है अपना भी आप बना लेगा
अनुकूल मसाला जो पा जाए और चूना गारा पा जाए

चुप देख के दोष उसे मत दो कोयल का काम ही गाना है
अभी जान लड़ा कर गाएगी यदि पेट को चारा पा जाए

किसी सेठ के दिल में झाँका है उसे कितनी चिंता रहती है
कैसे दुनिया का माल मता सारा का सारा पा जाए

क्या दोष त्रिलोचन मरु का है उसे अवसर दे कर देखो तो
सब रूप रंग दिखलाएगा जो जीवन-धारा पा जाए

देखा तो न भूले यही अपना स्वभाव है
याद आया करे जिस की वही तो अभाव है

जिस पथ पै हलाकान हुए मान भी गया
उस पथ पै चलते जाने का क्यों मन में चाव है

इस राह वे गुजरें तो मुझे भी बता देना
बिस्तर को छोड़ दूँ अभी इतना हियाव है

तुम को दिखाऊँ कैसे आँख और चाहिए
तन का नहीं है क्या करूँ यह मन का घाव है

तुम इतने से ही हार गए जी कड़ा करो
व्यजन है दुख के आने को यह पनपियाव है

जब टूट गया दिल तो और बात जोड़ें क्या
कहने दो उन्हे मेरा वही मनोभाव है

सूरज ने पड़ा देख मुझे हँस के यह कहा
उठ भी य' दुख नहीं है अभी खरमिटाव है

क्या मद है, क्या प्रवाह है, क्या नव तरंग है
ऋतुओं में देखता हूँ और हाव भाव है

क्या रूप क्या सिंगार है मालूम है हमें
रहने दो यहाँ बान नहीं है बनाव है

मनु की तो पार लग गई कुछ भी हो नाव थी
सागर यहाँ गरजता है किस ओर नाव है

मैं ने तो तरस खा के त्रिलोचन से कह दिया
दूकानें उठ गई है काव्य में गिराव है

जागरण की रात यह तेरा ख़याल आ ही गया
तू कहाँ है आज फिर मन में सवाल आ ही गया

आ गया तू द्वार पर मेरी प्रतीक्षा फल गई
देखता था जिस के सपने वह सुकाल आ ही गया

सोने के दिन चाँदी की रातें हैं अब क्या चाहिए
एक परिचित की क़लमसे उन का हाल आ ही गया

यह न होगा मुझ से कहते थे कभी पर उन को अब
धुन भी कोई चीज है अब वह भी ताल आ ही गया

तुम ने पीपल की अपत देखी तो जी भारी हुआ
आज देखो इस की लाली फिर प्रवाल आ ही गया

जिस के मारे सब दुखी थे सब के मन पर भार था
आज उस परतंत्रता से भी निकाल आ ही गया

हम स्वतंत्र कहाँ अगर खाने को भी मोहताज है
एक जठरानल में समझो सब का काल आ ही गया

ध्वनि प्रसारण यंत्र से कितने ही स्वर बरसे है आज
भोलेभालो के लिए शब्दों का जाल आ ही गया

सच त्रिलोचन मुझ को हिंदी पर बड़ा संदेह था
देखता हूँ आज उस में भी जमाल आ ही गया

अँधेरी रात है, मै हूँ, अकेला दीप जलता है
हवा जग जग के सोती है पथिक अब कौन चलता है

कहीं सोतों की वड़ है और कही कोई कराहा है
गली में दो बजे कहता पहरुआ ही टहलता है

धरा का कौन आकर्षण तिमिर में खीच लाया है
क्षितिज से व्योम में कोई तरल तारा निकलता है

तुम्हारा ध्यान आता है तो प्रायः चौक उठता हूँ
कलेजा रोज क्या यों ही पसलियों में उछलता है

तुम्हारी बाते सोचीं और अपनी बात भी सोची
इन्ही दो विंदुओं के बीच जीवन की विकलता है

चढ़ाया वर्तमान अपना तुम्हारे चरणों पर मैं ने
तुम्हारे एक इंगित पर सफलता या विफलता है

विरह ने आज यह क्या कर दिया ऐसा लगा जैसे
पकड़ कर मुट्ठियों में कोई मेरा दिल मसलता है

अकेलापन मुझे भी काटता है आज ही जाना
क़सम मेरी *बताना सच तुम्हें भी यों ही खलता है*

न कुछ भी धूलि धक्कड़ हो तो पथ कैसे चला जाए
कहा है चिकने पत्थर पर कदम जा कर फिसलता है

कहूँ क्या बात आँखों की इन्हे परदा नहीं आता
कही कुछ वेदना देखी कि आँसू वह निकलता है

त्रिलोचन भाव आते हैं तो रोके से नही रुकते
कभी झरने को देखा है जो अपनी ढाल ढलता है

कोई जहर पिलाए जाय पी लिया करे
कितने दिन और आदमी यों ही जिया करे

फटकार सहे, मार सहे, जो पड़े सहे,
दुर्दिन से असंतोष दुखी क्यों किया करे

स्वामी को सीख कौन दे आख़िर व' स्वामी है
सेवक का काम सेवा है समझा दिया करे

केवल ग्रहण हो ऋण का जहाँ शोध कुछ न हो
कोई कहाँ तक उस को कृपा से दिया करे

अवसर समान सब को दो क्या बात कही है
क्यों कोई कड़वी घूंट बराबर पिया करे

दुनिया को बदलने से ही दिन बदलेंगे सब के
पथ दूसरा नहीं है कोई कुछ किया करे

मैं ने सलाह दी है त्रिलोचन को आज ही
चाहे तो वह भी नाम तुम्हारा लिया करे

देखा वही हैं बार बार हाथ मार के
क्या डूब के रहेंगे सभी स्वप्न पार के

पाया नहीं, पाऊँगा नही, इतना ही न खै़र
तुम को मिलेगा बोलो क्या मुझ को बिसार के

सुख स्वप्न ही है अब तो यही कहना पड़ता है
दुनिया की और अपनी दशा को निहार के

हम गुल को चाहते हैं कोई कैसे जानता
एहसानमंद हम भी कम नही है ख़ार के

मेरी चिता की भस्म भी उड़ उड़ के कहती है
सुनने को हम तरस गए दो बोल प्यार के

वृंतों ने कहा माली से उस ने सुना नही
ले जाओगे ये फूल कहाँ तुम उतार के

राधा को आज देखा आज और बात थी
यौवन विराजमान था सीना उभार के

भीतर का विष विषाद घट से छलकेगा जरूर
कब तक चलोगे यत्न से शोभा सँवार के

छिड़काव कर लिया है घर आँगन में हम ने आज
हे प्रेम देव पाँव तुम्हारा पखार के

जो काट थी अलग है सुच्चा स्नेह अलग है
रक्खा है बड़े यत्न से उस को नियार के

आए ठहर के साँस ली फिर बोले बिखर के
आया हूँ जैसे तैसे अपनी बाजी हार के

प्रवल जलवात पा कर सिंधु दुस्तर होता जाता है
कठिन संघर्ष जीवन का कठिनतर होता जाता है

सुकर लगता था जो पहले उसे किस मुंह से कह दूं अब
न जाने क्या हुआ उस को कि दुष्कर होता जाता है

कमाता एक था परिवार पूरा चैन करता था
अकेले का भी जीवन अब तो दूभर होता जाता है

सभा में आँख मूँदी नित्य का दुख दर्द ग़ायब था
कहा नेता ने अब संसार सुंदर होता जाता है

बड़ों को छोटा छोटों को बहुत छोटा बना डाला
पटेले के तले ढेला बराबर होता जाता है

समुन्नति मनु के बेटों ने बहुत की इस में क्या कहना
मगर वह यंत्र पर ही और निर्भर होता जाता है

सिकंदर जग़नवी तैमूर तो केवल लुटेरे थे
इधर अब शांति की इच्छा से संगर होता जाता है

विमान इतने है ये मानव ने पंख अपने बनाए हैं
महासागर भी अब तो एक पोखर होता जाता है

नए विज्ञान ने साहित्य की विधिवत् परीक्षा की
य' क्या कारण है जो यह क्षेत्र बजर होता जाता है

तुम्हें यदि चोट पहुँचानी है तो रुक रुक के पहुँचाओ
कलेजा नित्य की चोटो से पत्थर होता जाता है

हमें आशा थी अब तो दुःख अपना पीछा छोड़ेंगे
मगर हम क्या करें पीछा निरंतर होता जाता है

वह कौन था जो मुझ को जगा कर चला गया
सोते से क्यों मुझे हो उठा कर चला गया

इतना असावधान हो के कैसे सो रहा है तू
कानों में कौन मंत्र सुना कर चला गया

जिन को तू अपना कहता है वे अपने अपने है
यह मुझ को पथ में कौन बता कर चला गया

तू अत्याचारियों के अत्याचार से न डर
किस को न महाकाल सता कर चला गया

साम्राज्य उपनिवेश अब भी खोज रहा है
हे मुक्त भूल मत कि कृपा कर चला गया

हम नें भी दुख को देखा है आँखें मिलाई है
अब भी है कही मत कहो आ कर चला गया

यौवन का रंग हम ने कहाँ कब नही देखा
गान अपने प्रेमभाव के गा कर चला गया

यौवन बसंत आए थे उपवन में साथ साथ
कैसा बसंत रंग दिखा कर चला गया

ओ सहचरी, सहचर से अपने तुझ को इतनी लाज
वह कौन था जो तुझ को सिखा कर चला गया

दुनिया से अंधकार हटा और पौ फटी
स्वर कौन प्रभाती के उठा कर चला गया

कहते हैं त्रिलोचन को अपने काम से है काम
कोई निकट निवासी जता कर चला गया

नदी सागर की लहरों में न डूबे वह जहाज आया
अगर इनसान ख़ुद उस को डुबा देने से बाज आया

कभी जो तेज़तर आँखों को भी रौशन नहीं था वह
अनोखा सत्य सब का है पकड़ में सब की राज आया

नए सुर ताल जीवन के चलेंगे चलते जाएँगे
नए कंठों से पूरा मेल खाने वाला साज आया

जमाने की लहर में वह के गायक गान गाते हैं
जमाने को जो देखा तो हमें भी कुछ अंदाज आया

त्रिलोचन तुम से क्या परदा न समझे हम यही अब तक
य' भोलापन य' खुलते दिन कहाँ से उन को नाज आया

कितने समीप थे वही कितने परे हुए
बैठे हैं आज याद में आंखे भरे हुए

खँडहर में खोजते हो क्या अब क्या धरा वहाँ
बीते हजार साल युगों को मरे हुए

छाया भी बड़ी चीज है हम मानते है यह
वर्षा है जिस के आने से तृण भी हरे हुए

झापस है, झड़ है, सात दिनों से लगा है तार
अब कांपते हैं पेड़ भी जैसे डरे हुए

विश्वास कोई क्यों न करे इस पै त्रिलोचन
आँखों के सामने ही है खोटे खरे हुए

सर्वमय होने से सही क्या है
नेकी आ जाय तो बदी क्या है

स्नेह की भूख आदमी को है
स्नेह मिल जाय फिर कमी क्या है

जब कहीं भी पयान करना हो
देख लो ठीक क्या नहीं क्या है

प्यार भी है उपेक्षा भी है
हम को बतलाइए सही क्या है

सिंधु को तैर कर जो आया है
उस के आगे कोई नदी क्या है

और ग़फलत करो जवानी है
बात बन जायगी अभी क्या है

हठ त्रिलोचन तेरा मेरी चिंता
उन से कहने की बात ही क्या है

बात कहने को अगर हो तो कही भी जाए
और जीने के लिए पीर सही भी जाए

व्यथा जाने का द्वार भूल गई है शायद
प्राण को छोड़ती नहीं है कहीं भी जाए

मुझ को संदेश मिला है अभी अभी उन का
अपनी बात आ के कहो तब तो सुनी भी जाए

बात पीड़ा की न पूछो नई निराली है
छिप के खुलती भी रहे खुल के घिरी भी जाए

बाँह गहने में त्रिलोचन यहाँ रखा क्या है
रक्षा होती हो वहाँ बाँह गही भी जाए

अमर यदि हम नहीं है तो हमारा प्यार क्या होगा
सुमन का वास से बढ़ कर भला उपहार क्या होगा

कथा दुख की सुनो और सुनते सुनते आँखे भर आईं
बहुत है यह भी दुखिया के लिए उपकार क्या होगा

तुम्हारा प्यार मेरे मन वचन और कर्म में आए
यही संकल्प अपना है अधिक संभार क्या होगा

जहाँ तुम हो नदी गिरि पुष्प तरु तृण जीव इतने हैं
अगर संसार.वह निस्सार है तो सार क्या होगा

रहो आँखों में मेरी कामना यदि है तो इतनी है
तुम्हारी बाँह है अपने गले में हार क्या होगा

जगत् रूठे तो रूठे तुम जो अपने हो तो क्या चिंता
किनारा कर लो यदि तुम भी तो फिर आधार क्या होगा

स्वयं जो आँसुओं में अपने डूबा हो तुम्हीं सोचो
डबाने के लिए ऐसे को पारावार क्या, होगा

उपेक्षित जो रहा है उस की चर्चा क्या चलाते हो
चलो रहने भी दो उस का स्वयं उद्धार क्या होगा

त्रिलोचन यह सही है लोग ख़ाली हाथ आते हैं
अगर ख़ाली रहें तो लोक में व्यवहार क्या होगा

दुख हमें कम न हुआ काँटे नित्य पा पा कर
काट दिए दिन अपने जैसे तैसे गा गा कर

तुम को चिंता है मेरा मन किसी तरह लग जाय
पथ सजा देते हो ये फूल नए ला ला कर

द्वार खुलने का नहीं लोग कहा करते हैं
देखता हूँ मैं लगन अपनी यहाँ आ आ कर

तुम भी कहते हो तो फिर मैं ज़रूर जाऊँगा
वरना लौटा हूँ कई बार वहाँ जा जा कर

ताप हरते है मेघ मैं ने ख़ूब देखा है
बरसते भी हैं त्रिलोचन गगन को छा छा कर

अपना समझा था तभी पास चला आया था
एक विश्वास था जो चेतना में छाया था

आँख में स्वप्न थे, आँसू थे और आशा थी
प्राण में व्यग्र प्रतीक्षा समेट लाया था

ठाट दुनिया में थे पर वे मुझे सुलभ कब थे
फूल मैं ने न कहीं कोई पड़ा पाया था

पंथ निर्जन था फूल और विहग मिलते थे
फूल सुनते थे गान विहगों ने सुनाया था

रात थी और शरण के लिए भटकता था
तुम ने दूरस्थ दीप से मुझे बुलाया था

वन का मृग मैं था और इच्छानुसार चलता था
बाँधने के लिए तुम ने ही गान गाया था

आज संसार त्रिलोचन भला लगे न लगे
कोई दिन था कि यही तुम को बहुत भाया था

बस कि जीते है और अपना काम करते हैं
मन ही मन याद उन्हें आठों याम करते है

बात अवकाश की अवकाश से बताएंगे
जी को कुछ चैन कहाँ कब आराम करते हैं

क्या कहें औरों से अपने से हम कहें क्या क्यों
बाट में उन की अपनी सुब्ह शाम करते है

मेरे मरने की ख़बर जा के उन्हें मत देना
वे नहीं रोते है रोने का नाम करते है

यह तो व्यापार है इस के नियम अलग ही है
क्या करें देख के गाहक को दाम करते हैं

जिन के जी में लगन है धुन है उन्हें चैन कहाँ
धुन में चलते हैं धुन में ही विराम करते हैं

तू त्रिलोचन बता क्यों मौन रहा करता है
आते जाते सभी से राम राम करते है

अजब जिंदगी है अजब जान भी है
अगर शाप है यह तो वरदान भी है

तुम्हें मर्म की बात आओ बताएँ
कहाँ सुख अगर दुःख का ध्यान भी है

निकालूँ तो मैं दुख को कैसे निकालूँ
भले घर में आया है मेहमान भी है

मेरी सिद्धि है जो कहीं साथ तुम हो
तुम्हारी जरा उन से पहचान भी है

कहीं रीझता है कहीं रूठता है
य' दिल बावला है तो नादान भी है

धनुर्धर यहाँ के करें तो करें क्या
जहाँ लक्ष्य है लक्ष्य-संधान भी है

त्रिलोचन अनोखी पहेली है जीवन
जो शंका है यह तो समाधान भी है

फिर तेरी याद जो कहीं आई
नींद आने को थी नहीं आई

मैं ने देखा विपत्ति का अनुराग
मैं जहाँ था चली वहीं आई

भूमि ने क्या कभी बुलाया था
मृत्यु क्यों स्वर्ग से यहीं आई

व्रत लिया कष्ट सहे वे भी थे
सिद्धि उन के यहाँ नहीं आई

साधना के बिना त्रिलोचन कब
सिद्धि ही रीझ कर कहीं आई

मित्र उठो कटि बांधो तुम्हें दूर जाना है
लक्ष्य का स्वप्न सत्य भी है देख आना है

सब तरस खाते है सूझी तुम्हें भला यह क्या
काम दुस्साध्य जो है तुम ने वही ठाना है

हम स्वयं ढूंड रहे है विकल हैं पृथ्वी में
कौन है देश जहाँ अपना आबोदाना है

प्रार्थनाएँ अनेक कीं तो कल जरा रीझे
आज फिर रूठ गए हैं उन्हें मनाना है

आदमी हो तो यहाँ सुनो भी सुनाओ भी
दुख घटाने का त्रिलोचन यही बहाना है

तेरी लौ लगी और धन धाम छोड़ा
अगर लाभ छोड़े तो आराम छोड़ा

मेरा जी भरा था जगत् से यहाँ तक
इधर रूप छोड़ा उधर नाम छोड़ा

अभी आप गत वर्ष की पूछते है
महीनों हुए मैं ने वह काम छोड़ा

ग्रहण त्याग की बात अपनी कहूँ क्या
सुबह जिस को पकड़ा उसे शाम छोडा

अगर ग्राम उद्धार हो तो भला हो
मुझे अपनी चिंता थी जब ग्राम छोडा

विधाता की चिंता मुझे किस घड़ी थी
सुना वाम है तो उसे वाम छोड़ा

दया क्यों भरी है त्रिलोचन के जी में
समय ने नहीं गाँठ में दाम छोड़ा

धरती ख़ुशी मना तू बरसात आ गई है
जो बात कल नही थी वह बात आ गई है

अपनी भी फ़िक्र कुछ कर हारा थका हुआ है
तुझ को विराम देने यह रात आ गई है

तू चाहता था जिस को जिस के लिए विकल था
वह सिद्धि देख उठ कर अब हाथ आ गई है

तप ताप और कितना भू का अटल रहेगा
आषाढ़ की मनोहर बारात आ गई है

बैठा हुआ है क्यों तू असहाय सा त्रिलोचन
तू जिस को ताकता था वह घात आ गई है

वैसे सुनने में एक भाषा है
अर्थ का भेद अच्छा ख़ासा है

प्यार कह के जो कल दिया तुम ने
आज देखा तो वह तमाशा है

तृप्ति दे दे के प्राण को देखा
फिर भी भूखा है फिर भी प्यासा है

दुनिया बदली है जानता हूँ मैं
आप बदलेंगे नही आशा है

आप का मौन मुसकरा देना
नित्य मेरे लिए दिलासा है

आप औरों से पूछते क्या है
भेद अपना खुला खुला सा है

तुम को पाए बिना कहाँ है शांति
कल्पना मात्र है दुराशा है

चाहता है मरण से भी जीवन
ऐसी इनसान की पिपासा है

सूर्य उग आया है त्रिलोचन देख
कुछ ही क्षण और यह कुहासा है

धरती ख़ुशी मना तू बरसात आ गई है
जो बात कल नहीं थी वह बात आ गई है

अपनी भी फ़िक्र कुछ कर हारा थका हुआ है
तुझ को विराम देने यह रात आ गई है

तू चाहता था जिस को जिस के लिए विकल था
वह सिद्धि देख उठ कर अब हाथ आ गई है

तप ताप और कितना भू का अटल रहेगा
आषाढ़ की मनोहर बारात आ गई है

बैठा हुआ है क्यों तू असहाय सा त्रिलोचन
तू जिस को ताकता था वह घात आ गई है

वैसे सुनने में एक भाषा है
अर्थ का भेद अच्छा ख़ासा है

प्यार कह के जो कल दिया तुम ने
आज देखा तो वह तमाशा है

तृप्ति दे दे के प्राण को देखा
फिर भी भूखा है फिर भी प्यासा है

दुनिया बदली है जानता हूँ मैं
आप बदलेंगे नही आशा है

आप का मौन मुसकरा देना
नित्य मेरे लिए दिलासा है

आप औरों से पूछते क्या है
भेद अपना खुला खुला सा है

तुम को पाए बिना कहाँ है शांति
कल्पना मात्र है दुराशा है

चाहता है मरण से भी जीवन
ऐसी इनसान की पिपासा है

सूर्य उग आया है त्रिलोचन देख
कुछ ही क्षण और यह कुहासा है

चलने को हम भी चलते है औरों से कम नही
अफसोस है तो बस यही सच्चे क़दम नही

धुर्रे बिगड़ गए तो पहिए दूर दूर थे
अब चुप थी गाड़ी कह के कहीं भूमि सम नही

हाथों में कंप न था कोई बात नहीं थी
आँखों में रोशनी है वही पर व' दम नहीं

अपनी थी तड़ी तापड़ी तो राग रंग थे
बीती बहार अब व' कही छूम छम नही

चलते हों हाथ पाँव तो जीने का अर्थ है
जीवन की कल्पना में किसी ओर भ्रम नहीं

आदर किसी का है तो अनादर किसी का है
कोई कहे तो विश्व का जीवन विषम नहीं

यह माना अभी रात है यह शुक्र भी देखो
पहले भले रहा हो प्रबल अब से तम नही

इस क्षण मिलाप है तो किसी क्षण बिगाड़ है
यह प्रेम भी विचित्र है कुछ भी तो क्रम नही

कुछ तुम ने भी सुना है त्रिलोचन की उक्ति है
औरों को खा के जीते है जो उन में हम नहीं

लक्ष्य आएँगे पर आह्वान भी करना होगा
हम को जीना है तो विषपान भी करना होगा

आप चाहें अगर भविष्य को खड़ा करना
प्यार ही तब नहीं संमान भी करना होगा

ध्येय पाने के लिए युक्तियाँ कहाँ कम है
उस को पाने के लिए ध्यान भी करना होगा

बात ईश्वर ने कही यदि मनुष्य होना है
तो तुझे औरों से एहसान भी करना होगा

सुख त्रिलोचन तुझे मिले तो किस तरह आख़िर
अपनी चिता का तुझे दान भी करना होगा

साँस चलती है समझ लो कि अभी जीता हूँ
विष है प्याले में जिसे रोज़ रोज पीता हूँ

वह बुरा स्वप्न हूँ कि देख के जो घबराए
जानता मैं भी नही किस प्रकार तीता हूँ

जिन को कठिनाइयों में सूझता नहीं कुछ भी
ऐसे जिज्ञासु जनों के निमित्त गीता हूँ

कितने आँखों की राह से बहा दिए आँसू
इतने पर भी मैं नही आँसुओं से रीता हूँ

जो सदा हाथ में होने से ही उपेक्षित हो
मैं त्रिलोचन जगत का ऐसा ही सुभीता हूँ

तुम को देखा है दिन अब आज का कट जाएगा
दल जो मेघों का उमड़ आया था छट जाएगा

मेरे विश्वास ने मुझ से कहा था पहले दिन
पथ को मत छोड़ो विघ्न आप ही हट जाएगा

दिन जो बढ़ते है तो उत्साह वह नहीं रहता
वेग यौवन का घटा करता है घट जाएगा

आज जो रूप सरे राह देख कर ठहरे
कल वही ऐसी छुअन होगी कि लट जाएगा

यह जो मुसकान का परदा है त्रिलोचन वह तो
काल की एक ही फ़टकार में फट जाएगा

अपना समझ के मैं ने तुम्हें दिल दिखा दिया
क्यों तुम ने भेद उस का विश्व को बता दिया

वसुधा कुटुंब है अजी कहने की बात है
आपस की दुश्मनी ने मुझे यह पता दिया

तुम ने कहा हम लोग अब अच्छे हैं भले हैं
इनसान को कहाँ से कहाँ देखो ला दिया

वे लाभ उठा रहे है तो ग़म क्यों हो किसी को
आख़िर उन्होंने कार बार भी बना दिया

दिखलाई नहीं देते आजकल क्यों त्रिलोचन
मैं ने सवाल उन का उन्हीं को सुना दिया

यह दिल क्या है देखा दिखाया हुआ है
मगर दर्द कितना समाया हुआ है

मेरा दुख सुना चुप रहे फिर व' बोले
कि यह राग पहले का गाया हुआ है

झलक भर दिखा जायँ बस उन से कह दो
कोई एक दर्शन को आया हुआ है

न पूछो यहाँ ताप की क्या कमी है
सभी का हृदय उस मे ताया हुआ है

यही दर्द था जिस ने तुम से मिलाया
य' यों ही नहीं जी को भाया हुआ है

गढ़ा मौत का है नहीं भरने वाला
यहाँ अनगिनत का सफाया हुआ है

त्रिलोचन सुनाओ हमें गान अपने
जहाँ दर्द जी का समाया हुआ है

चाहता हूँ मैं मनुज के ताप को कुछ हर सकूं
शून्यता उस के हृदय की हो सके तो भर सकूं

व्यर्थ का संकोच आ आ कर न बांधे हाथ पांव
मैं सुपथ पर काम करने के निडर हो कर सकूं

विश्व नश्वर है तो जीवन की कहां फिर ख़ैर है
चार दिन पहले सही, कल्याण करते मर सकूं

डूब जाते हैं जहां अच्छे भले तैराक भी
धैर्य दो मुझ को कि वह भवसिंधु निर्भय तर सकूं

नित्य नूतन रूप सुख लेता है अगले स्थान पर
तो भी मैं दुख दूसरों का शांतिपूर्वक तर सकूं

मौन आए मौन सौरभ को लुटाया रंग से
बल मुझे दो फूल जैसे मौन रह कर मर सकूं

चाहता हूँ मैं त्रिलोचन न्याय के पथ पर रहूँ
न्याय को धारण करूं फिर न्याय से ही डर सकूं

कहते है विश्व का स्रष्टा कोई विधाता है
खेल जीवन के वही नित नए दिखाता है

तू बहुत टूट गया है लिखा है यह मुख पर
मुसकराहट में इसे व्यर्थ हो छिपाता है

चैत के दिन हैं बसी हैं गुलाब की डालें
कैसा आनंद है बुलबुल को; गान गाता है

कितना अवसन्न हूँ. कितना दुखी है मेरा मन
अपनी बस्ती में कहीं हर्ष नहीं पाता है

बात तरु से कही प्रसून ने खिलते खिलते
विश्व के द्वार तू भिक्षुक नही है दाता है

जो भी है आदमी ग़म खाएगा सही यह है
रात दिन ग़म ही उसे आह, खाए जाता है

कैसी जीवन की बेबसी है सोचता हूँ मैं
जब कोई मृत्यु को बढ़ कर गले लगाता है

मौन अच्छा है त्रिलोचन उन्हीं को जिन का मन
अपनी पीड़ा के दंश से ही छटपटाता है

सभी को कोयल पुकार आई
जगत के वन में बहार आई

रखे सजा कर सिंगार कल जो
व' आज दुनिया उतार आई

खिली गुलाबों की डालियाँ है
उन्हें मधुश्री दुलार आई

जो मैं ने चिंता मनुज की देखी
तो समझा शोभा उधार आई

प्रसून फूले, सुगंध छाई
हवा यह सब से जुहार आई

लजा लजा कर उठी हैं कलियाँ
उमंग इन को उभार आई

शिशिर का संकोच अब कहाँ है
वसंत की ऋतु उदार आई

सुनी त्रिलोचन की प्रार्थना तो
सरस्वती सुख विसार आई

तुम्हारी ओर से मन अपना मैं लौटा नहीं पाता
यह क्या है जो तुम्हारे पास फिर भी आ नहीं पाता

अजब लाचारियां हैं अपनी इन को कौन समझेगा
कि सब कुछ खो के भी जी भर के मैं पछता नहीं पाता

न करना है तुम्हें कुछ और न तुम कुछ करने वाले हो
तुम्हारी बात में क्या है कि मैं उकता नहीं पाता

बहुत सोचा विचारा पर नहीं परिणाम तक आया
यह क्यों है मैं समझता हूँ तुम्हें समझा नहीं पाता

त्रिलोचन बात औरों की सभी तो बूझा करते हैं
मैं अपने मन का मेल उन से कभी बैठा नहीं पाता

चतुष्पदियाँ

स्वर के सागर की बस लहर ली है
और अनुभूति को वाणी दी है
मुझ से तू गीत माँगता है क्यों
मैं ने दूकान क्या कोई की है

स्वर सभी तान पर नहीं मिलते
हृदय अभिमान पर नही मिलते
पास पैसा है और धुन भी है
गीत दूकान पर नहीं मिलते

मंत्र मैं ने लिया है तो अपना
हृदय भी यदि दिया है तो अपना
दूसरे किस लिए करें चिंता
बुरा मै ने किया है तो अपना

जान कर तू फ़िज़ूल रोता है
और मुंह आंसुओं से धोता है
जिंदगी है यह कोई खेल नही
खेल भी खेल नहीं होता है

प्यार किस चीज़ को कहते हैं लोग
क्या इसी दुनिया में रहते है लोग
कभी इच्छा है कभी आशा है
तेज धारा है और बहते है लोग

हाल तुम से भी कुछ लिखाऊँ मैं
देखने की कला सिखाऊँ मैं
वे जो गूंगे हैं आँख वाले है
उन की दुनिया तुम्हे दिखाऊँ मैं

अच्छे हो, ख़ूब हो, जंगल के गुलाब
अपनी ख़ुशबू से हो मंगल के गुलाब
बात बन जाय जो उपवन में आओ
और भी है वहां दंगल के गुलाब

सर की लहरों से हो हिलता है कमल
सूर्य से जाग के मिलता है कमल
जल तो जल ही नहीं जीवन भी है
जल में रह कर ही तो खिलता है कमल

तुम को मेरे समीप आना है
और आ कर व' गीत गाना है
जिस से जीवन के घर में मै भूलूं
मुझ को अब और कहीं जाना है

सच है, दुनिया ने मुझे सुख न दिया
स्वप्न में देखा जो व' मुख न दिया
फिर भी मुझ को दिया है ऐसा कुछ
स्वर्ग ने जिस प' कभी रुख़ न दिया

कोई आंसू यहां दिखाता है
कोई दिन चैन से बिताता है
सच है, दुनिया सरायफ़ानी है
एक जाता है एक आता है

आए जो आप आ गए आँसू
और विदाई में छा गए आँसू
सुख में दुख में कहाँ नहीं देखा
हम तो साथी य' पा गए आँसू

दु ख अपना जो कहा कम न हुआ
चित्त देखा कदापि सम न हुआ
साँस में मैं ही मैं समाया था
लाख कोशिश की मगर हम न हुआ

आजकल जी उदास रहता है
चोटें आती हैं और सहता है
कल इस से अच्छा दिन आएगा
आज की लहरों से कहता है

नींद उचटी तो कुछ सुना मैं ने
मन ही मन क्या नहीं गुना मैं ने
पाँव कुछ कह के बढ गए आगे
पंथ अपना नहीं चुना मैं ने

ठीक आई है गान गा कोयल
बात इतनी सी मान जा कोयल
जेठ की लू बहुत अखरती है
तान पंचम की तान जा कोयल

बहने लगता है जभी मलयानिल
प्राण भरता है तभी मलयानिल
स्वर्ग संदेश सा धरातल पर
राज करता है कभी मलयानिल

कारवाँ कल्ल जो यहाँ से गुजरा
कौन जानें व' कहाँ से गुजरा
किस ने आँखें नही बिछा दी थीं
ठहर कर भी तो वहाँ से गुजरा

तुम ने देखा था क्या हसीना को
याद करना जरा हसीना को
रंग पक्का बड़ी बड़ी आँखें
हिरन सी चंचला हसीना को

कौन वह सामने से जाती है
पास आती नही लजाती है
फूल में, चाँदनी में, तारों में
रास जीवन के जो रचाती है

पथ हमारा कही उधर मुड़ जाय
और फुलवारी से जा कर जुड़ जाय
कितना अच्छा हो और अच्छा हो
शाह बुलबुल न चमक कर उड़ जाय

सोच में रात भर जगा हूँ मैं
खोज में शांति की लगा हूँ मैं
जो थके हैं, गिरे हैं, हारे है
उन का आत्मीय हूँ सगा हूँ मैं

तुम से कहना ही क्या मजबूर हूँ मैं
मालिक अपना नही मजदूर हूँ मैं
ज्ञान इच्छा प्रयत्न के बल को
जान कर भी अलग हूँ दूर हूँ मैं

दर्द साथी मेरा पुराना है
मैं ने उस को निकट से जाना है
उस के नाते ही सारी दुनिया को
मैं ने अपना अभिन्न माना है

चाय की प्यालियाँ कभी मत दो
हर्ष की तालियाँ कभी मत दो
चाह की राह से अगर आए
दर्द को गालियाँ कभी मत दो

तुम कहानी की चाह में आए
यहाँ अनजानी राह में आए
काव्य का लोक ही निराला है
यह न समझो कि ब्याह में आए

हम ने देखा था फूल हँसते थे
डाल पर झूल झूल हँसते थे
पूछा, कल की भी कुछ ख़बर है क्या
बात सब भूल भूल हँसते थे

कल जो बालक जमीन पर आया
गान जीवन की वीन पर आया
दीन दुनिया से जो अपरिचित था
आज दुनिया के दीन पर आया

नींद आई तो कहा जा तू जा
आज सोने से रहा जा तू जा
काम ही काम देख फैला है
बोल मत मुझ को सहा जा तू जा

फूल आया कि आ गए भौंरे
ख़बर कैसे य' पा गए भौंरे
उठ के आषाढ़ के मेघों की तरह
घेर के घिर के छा गए भौंरे

चार दिन के लिए ही आया था
कंठ खुलते ही गान गया था
कीट्स का नाम लोग लेते हैं
कैसे बन कर सुगंध छाया था

राह चल तो सँभल सँभल कर चल
जैसे भी हो सँभल सँभल कर चल
भीड़ आँखों की है, पता भी है,
चार दिन को सँभल सँभल कर चल

नौजवानी है अकड़ने के लिए
हवा मुट्ठी में पकड़ने के लिए
हम उसे मुक्त देख कर ख़ुश हैं
तुम हो बेताब जकड़ने के लिए

तुम ने साहस भी क्या बढ़ाया है
जान कर सिर कभी चढ़ाया है
या डरे रह के नौजवानों को
पाठ ही शांति का पढ़ाया है

फूल पूजा में चढ़ा करते है
हाथ श्रद्धा के बढ़ा करते हैं
वह है इनसान के फूलों के लिए
शांति के पाठ पढ़ा करते है

धीरता जान है हिमालय की
वीरता शान है हिमालय की
सिर जो ऊँचा है वह रहे ऊँचा
एक ही आन है हिमालय की

प्रीति की राह पर चले आओ
नीति की राह पर चले आओ
वह तुम्हारी ही नहीं सब की है
गीति की राह पर चले आओ

हम ने तुम को बहुत पुकारा है
कोई हो आदमी तुम्हारा है
धुन अगर त्राहि त्राहि की आए
तो करो त्राण, त्राण प्यारा है

सभ्यता का जुलूस जब निकला
हम ने जाना ही नहीं कब निकला
राम दीनू भी थक गए आखिर
दूसरे पथ से साज सब निकला

पात्र छूँछे है भरे भी तो क्या
शून्य भरने को धरे भी तो क्या
जरा सी जान सौ बलाएँ हैं
आखिर इनसान करे भी तो क्या

पद्मविभूषण जो हँसे हँसते रहे
हम जो लहरों में फँसे फँसते रहे
बाघ बूढ़ा व' कड़ा सोने का
लोग दलदल में फँसे फँसते रहे

झूरी बोला कि बाढ़ क्या आई
लीलने अन्न को सुरसा आई
अब को थीनाथ तिवारी का घर
पक्का बन जाने की सुविधा आई

तुम जो कहते हो भूल जाते हो
थोड़ी सी शह में फूल जाते हो
भाप इंजन से जो निकलती है
उस के झूले प' झूल जाते हो

तुम न रोके रुको निकल आओ
विघ्न से मत झुको निकल आओ
आज नारी सँभल के चलना है
घर में अब मत लुको निकल आओ

नर जो संसार में भटकता है
इस जगह उस जगह अटकता है
कैसे नारी घिरी रहे घर में
उस का उद्योग क्यों खटकता है

साथ निकलेंगे आज नर नारी
लेंगे काँटों का ताज नर नारी
दोनों संगी हैं और सहचर हैं
अब रचेंगे समाज नर नारी

तुम ने इस देश को समझा क्या है
प्राण के क्लेश को समझा क्या है
दुख में दुखियों ने सिर उठाया है
दुख के संदेश को समझा क्या है

डूबते को अगर तिनका मिल जाय
फूल कुम्हलाता हुआ यदि खिल जाय
तो उमंग कि स को कुछ नही होगी
शेष का भार भी यों ही झिल जाय

सभ्यता कब कहाँ ठहरती है
आज यहाँ कल वहाँ बिचरती है
लीक ही रथ की छोड़ जाती है
भीड़ उस पथ से चला करती है

तुम ने विश्वास दिया है मुझ को
मन का उच्छ्वास दिया है मुझ को
मैं इसे भूमि पर सँभालूँगा
तुम ने आकाश दिया है मुझ को

सूत्र यह तोड़ नहीं सकते हैं
तोड़ कर जोड़ नहीं सकते है
व्योम में जायें कहीं भी उड़ जायें
भूमि को छोड़ नही सकते है

प्यार सा प्यार दिया है तुम ने
ऐसा उपहार दिया है तुम ने
भूख आत्मा की मिटाने के लिए
दिव्य आहार दिया है तुम ने

हम जो जीवन का घर बनाएँगे
उस को मानव का वर बनाएँगे
जिस से गूँजा करें घर पुर वन पथ
ऐसे कुछ शब्द स्वर बनाएँगे

मुट्ठी बांधे जो आज आया है
कुछ तो है ही जो साथ लाया है
कहता है वह कहां कहां कहां
मां ने आंचल उसे पिलाया है

फूल खिलते हैं खिला करते हैं
हवा आई तो हिला करते हैं
कहते हैं लो महक तुम्हारी है
हम यही ले के मिला करते हैं

प्यास मरुस्थल में लगे क्यों आखिर
चाह दुर्लभ की जगे क्यों आख़िर
कष्ट ही कष्ट अगर मिलता हो
प्रेम अंतर में पगे क्यों आख़िर

दूध जिस छाती का पिया तुम ने
उस से व्यवहार क्या किया तुम ने
बेटे आदम के हो कहें तो क्या
काट उस छाती को लिया तुम ने

सत्य है, राह में अँधेरा है
रोक देने के लिए घेरा है
काम भी और तुम करोगे क्या
बढ़ चलो सामने अँधेरा है

स्वप्नद्रष्टा हूँ स्वप्न वह आए
जिस की धारा में अमृत बह आए
द्वेष यह, दुःख यह, दुराशा यह
जाय, मन मन को सहे, सह आए

भूल जाने के लिए कहते हो
कौन दुनिया है जहाँ रहते हो
हम को बस याद का सहारा है
अपनी लहरों में बहो बहते हो

आओ कुछ दूर साथ साथ चलें
हाथों में लिए दिए हाथ चलें
जितना निभ जाय उतना ही अच्छा
थपुए अपने अपने पाथ चलें

द्वार अब जकड़ो मत खुला रक्खो
अपनों को सामने बुला रक्खो
सुदिन बस आने आने वाला है
अपने घर बार को धुला रक्खो

तुम ने खोया नही तो पाया क्या
तत्त्व कोई समझ में आया क्या
बाट से माल तुला करता है
तुल जो कांटे पै गया माया क्या

आज कैसी सुगंध आई है
यह लहर और तेज आई है
कौन कस्तूरी मृग यहाँ आया
वस्तु पाने की आज पाई है

आदमी का मुझे विश्वास तो है
आदमीयत की उसे प्यास तो है
चोरी हत्या से उस की क्या डरना
उस में जीवन का कुछ आभास तो है

न्यौता मैं ने सभी को भेजा है
अपने लोगों को भी सहेजा है
प्रेम जिन का मनुष्यता से हो
उन का आदर स्वयं अँगेजा है

मार से काट से बचे रहिए
प्रेम के रंग से रचे रहिए
आदमीयत का प्यार पाना हो
आँख की आँख में जचे रहिए

तुम से सुनता हूँ सुना देता हूँ
मोती हंसों को चुना देता हूँ
भाव भाषा के हैं ताने बाने
वस्त्र आत्मा के बुना देता हूँ

हाथ में पाँव में बल आने दो
अभी लड़ने की बात जाने दो
प्राण से किस लिए अरुचि इतनी
पुष्टि अंगों को और पाने दो

बल नहीं होता सताने के लिए
वह है पीड़ित को बचाने के लिए
बल मिला है तो बल बनो सब के
उठ पड़ो न्याय दिलाने के लिए

विश्व ने ही हमें दिया है क्या
काम अपना कभी किया है क्या
उस के कल्याण में उलझें क्यों हमीं
हम ने ठेका कोई लिया है क्या

मुझ को सब दिन प्रभात भाता है
हृदय का तार तार गाता है
जन्म उस का महान है, देखो,
सारा ससार जाग जाता है

झुरई, अलगू, जिबोध को देखो
उन के व्यवहार बोध को देखो
कहाँ विज्ञान है, कहाँ वे है
और फिर भव्य शोध को देखो

कल जो निकला व' मशालों का जुलूस
व' था वस्तुत: जीने वालों का जुलूस
घोर तम में प्रकाश था भी कितना
फिर भी बढ़ता था बढ़ने वालों का जुलूस

कल के क़ैदी की शान तो देखो
आज उस का विधान तो देखो
क़ैद फाँसी का जो विरोधी था
उस के घर इन का मान तो देखो

ख़ून कल आदमी का छलका था
लाठियों का प्रहार हलका था
कौन आई को टाल पाया है
मर गया पाजियों के दल का था

वह जो इंदौर में चली गोली
जाँच उस की अदालती हो ली
बदली कर दी वहाँ जो अफ़सर थे
न्याय की क्या नई प्रथा खोली

शांति अब हर तरह से बाहर है
जो कुछ उत्पात है अब अंदर है
घर में घुस कर करो चाँदमारी
इतना अधिकार तो बराबर है

आप देखेंगे सिर धुनेंगे अब
सोच कर कोई पथ चुनेंगे अब
वे समाजवाद के नशे में हैं
आप की बात क्या सुनेंगे अब

सब की कुछ और है कथा जी की
भिन्न मिलती है हर व्यथा जी की
दुख की पर्तों में कहीं होगी जान
कोई आख़िर कहे भी क्या जी की

आस है तो जरूर नाता है
प्राण संबंध फिर निभाता है
याद कुछ भी कभी नहीं आती
एक ऐसा भी काल आता है

जिस को मंज़िल का पता रहता है
पथ के संकट को वही सहता है
एक दिन सिद्धि के शिखर पर बैठ
अपना इतिहास वही कहता है

विश्व जीवित नहीं विस्तार से है
सत् की सत्ता सदा सत्कार से है
सत्य जीवन का जानते हैं हम
आदमी आदमी प्यार से है

खिड़की पै जो गौरैया चहचहाती है
जीवन के गान अपने वह सुनाती है
जाने कहाँ कहाँ से दिन में जा जा कर
प्राणों की लहर पंखों में भर लाती है

शीश पर फूल फल जो लेता है
दूसरों को ही सौंप देता है
छाया अपनी लिए सदा तत्पर
वृक्ष ही बस परार्थचेता है

फूल खिलते हैं अपने ही रस में
सुरभि देते हैं जो भी है बस में
लोकरुचि भेद किया करती है
बात पर खाय क्यों कोई कस्में

दूसरो को भी जब दुखी पाया
तब सहज ही मुझे विचार आया
अपनी चिंता में क्यों रहो कट कर
सब के सिर जब वही गगन छाया

मेह आ आ के बरस जाते हैं
सब के कहाँ एक ही रस जाते हैं
खेत, ऊसर, पहाड़ को देखो
कैसे आँखों को परस जाते हैं

काल के वृक्ष पर लगे है अभी
रंग में रूप में पगे है अभी
सत्र यही है कि हम हमारा सुग:
आजकल के लिए सगे है अभी

फिर अतीत की पुकार आती है
बस पुकार ही पुकार आती है
कब ठहरे और सुने वर्तमान
पीछे पीछे पुकार आती है

वर्तमान बोला अतीत अच्छा था
प्राण के पथ का मीत अच्छा था
गीत मेरा भविष्य गाएगा
यों अतीत का भी गीत अच्छा था

सत्य यह बात दृष्टि आती है
प्रलय के बाद सृष्टि आती है
हम ने देखा है बराबर जग में
ग्रीष्म के बाद वृष्टि आती है

मेह का चुपके चुपके आ जाना
और आकाश भर में छा जाना
चमकना, गरजना, बरसना फिर
बात की बात में विला जाना

रंग दुनिया का कम नही होगा
आज कुछ है कल और भी होगा
हम न होंगे, हुआ क्या, आगे भी
उस का भागी मनुष्य ही होगा

जब लहर आई तो मैं ने गाया
जी का व्यवसाय बस यही पाया
शब्द और अर्थ थे जगत् के ही
भाव अपने उन्ही में भर लाया,